शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 17 | उदयपुर रविवार 01 अक्टूबर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मंडोवर जहां रावण ने विवाह किया

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

जोधपुर के पास मंडोवर बड़ा प्रचीन और ऐतिहासिक नगर कहा जाता है। वहां जाकर कोई देखे तो उसे कल्पना नहीं करनी पड़ेगी पर पुरातन एवं संग्रहालय विभाग ने जो कुछ बताने को संग्रह कर रखा है, लोगबाग तो प्राय: वही वही देखकर चले आते हैं। ऊपर भी जहां तक सड़क बनी है वहां तक भी बहुत कम लोग जा पाते हैं। चारों ओर पत्थर ही पत्थर चट्टानें पसरी घसरी पड़ी हैं।

उसे क्या देखना पर असली दिखावा तो ऊपर ऊंचाई की ओर ही है। वहां जो रचना आज भी जिस रूप में जमी बिखरी हड़बड़ हुई मिलती है उससे उस नगर का पुरातन वैभव, उसकी समृद्धि, उसका ठाठबाट, ललित लावण्य और सौंदर्य-शौर्य तथा कला-सांस्कृतिक परिवेश खुल-खुल खिलखिला पड़ता है। ऊपर जहां तक नजर जाती है पत्थर ही पत्थर। चट्टानें जमी बिखरी पड़ी हैं। कहते हैं 24 कोस तक यह नगर फैला हुआ था। कई महल उल्टे पड़े हैं। ध्यान से देखने पर लगता है जैसे सारा नगर ही किसी ने उलट दिया है।

20 जुलाई 1984 को मंडोवर की यात्रा के दौरान हमने वहां की एक-एक चट्टान देखी। गिरे हुए महल-खंडहर देखे। सब कुछ यही-यही आभास दे रहे थे। जब मैं अपना कैमरा आंख पर टिकाये जा रहा था तब मुझे एक बुढ़िया ने कहा भी- 'लाला, कांई फोटू लेवे है, आखी नगरी ही उल्टी पड़ी है।'

इतने में सेवक सरजुदासजी में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ साक्षात् हो आए। उन्होंने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी। बोले- 'साढ़े सात हजार वर्ष पूर्व रावण ने यहां आकर मंदोधरी से विवाह किया था। मंदोधरी का पिता मंदूजी था। उसी के नाम से मंडोवर नाम पड़ा।' हमें वह चंवरी बताई, पत्थर की बनी 10 खंभों वाली जहां रावण का विवाह सम्पन्न हुआ।

पास ही पत्थर में उत्कीर्ण बड़ा कलात्मक तोरण भी बताया जो अब तो टुकड़ों-टुकड़ों में वहां पड़ा है परन्तु उसे देखने से यह पता तो लग ही जाता है कि यह विवाह कितना शाही ठाटबाट वाला और ऐश्वर्य सम्पन्न रहा होगा। इसके लिए कितनी तैयारी करनी पड़ी होगी। कितने कारीगरों ने रात-दिन एक कर कई रात-दिन काम कर विवाह को स्वर्गिक सुख दिया होगा। अपनी कला की कीर्ति गाथा तो वहां पड़े पत्थर स्वयं मुंह बोल बयान कर रहे हैं। कल्लाजी ने एक महल के सर्वोच्च सिरे पर ले जाकर हमें बताया कि यह ध्वस्त महल 24 खंडों का था। 12 खंड ऊपर तथा 12 इसके नीचे थे। नीचे के खंड तलघर तो आज भी सुरक्षित हैं। इनकी बनावट इस ढंग से की थी कि प्रत्येक खंड में जाने-आने तथा हवा रोशनी पहुंचने का पूरा-पूरा प्रबंध था। आसपास के कुछ महलों के नीचे हम गये। उनके तलघर देखे। हवा जाने के स्थान देखे। बड़ी-बड़ी चट्टानों के नीचे दबे मुख्यद्वार देखे जिनसे नीचे पहुंचा जाता है पर आज उन भीमकाय चट्टानों को कौन हिला सकता है। नीचे के तलघरों में छिपे खजाने भी हैं जिनमें करोड़ों मन निधि दबी-छिपी पड़ी है। एक तलघर में तो पूरा मंदिर दबा पड़ा है जिसकी दीवार पर उत्कीर्ण रंगबिरंगी आकृतियां आज भी ताजा लग रही हैं।

वे स्थान देख जहां रजपूत रहते। रानियां रहतीं और अपनी-अपनी कुलदेवियों की पूजी करतीं तब ही जाकर अन्न, जल ग्रहण करतीं। मंदोधरी का महल देखा। उसकी कुलदेवी का पूजास्थल आज भी वैसा ही है। पुराना होते हुए भी बहुत ताजा। कई महल ध्वस्त हो गये पर कई यूं के यूं जमे हुए हैं जिनके झांकते मुंह बोलते पत्थर कितने सुहावने, सौम्य और कांतियुक्त लग रहे हैं। बड़े-बड़े दरवाजे विरान पड़े खंडहरों के मूक साक्षी हैं कि तब कैसी-कैसी रही होगी सारी रचना!

कल्लाजी ने बताया कि रावण जितना बलशाली था उतना ही अभिमानी। वह संसार को अपने अधीन कर लेना चाहता था। उसने मेंदूजी को भी कह दिया कि वे उसके अधीन हो जायें। मेंदूजी को भला यह क्यों कर स्वीकार्य होता! उन्होंने अपने जंवाईराजजी का मान रखते हुए विनयपूर्वक उनकी यह बात नहीं मानी। रावण को कहां धैर्य था। वह बड़ा कुपित हुआ। उसने कुंभकरण व मेघनाद की सहायता से सारी नगरी को ही उलट दिया। इसलिए आज भी सारा नगर उल्टा पड़ा है। यहीं चंवरी के पास राणी महल, जनाना महल के ध्वंसावशेष देखे। कुछ कमरे तो यहां आज भी ऐसे हैं जिनमें की गई कला-कारीगरी देखते ही बनती है। वह रंग और रूप विन्यास आज भी वैसा ही बना हुआ है।

लोकदेवता कल्लाजी ने बताया कि प्राचीन इतिहास की सही जानकारी नहीं होने से बड़ा अर्थ का अनर्थ हो रहा है। हर बात का इतिहास भी तो नहीं लिखा गया। कौन इतिहासकार लिखता मंडोवर की यह कहानी? उसे कौन बताता? इसलिए बहुत सी चीजें काल की परतों में दबी पड़ी हैं जैसे मंडोवर बड़ी-बड़ी चट्टानों के नीचे औंधा पड़ा हुआ है। हमने राई-आंगन, सभा-मंडप, हाथी-घोड़ों के ठाण, दासियों के रहवास गृह सब कुछ देखा। नीचे वह एक पत्थर का महल तो सभी दर्शनार्थी देखते हैं। उसी से पता चलता है कि उस समय की पत्थर कला-कारीगरी कितनी बढ़ी-चढ़ी थी।

-शेष पृष्ठ सात पर

नन्हे आदमी ने कहा, खूब पढ़ो लिखो

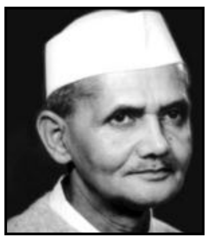

25 अगस्त 1955 का दिन। उन दिनों में बीकानेर के रामपुरिया इन्टर कॉलेज में प्रथम वर्ष का छात्र था। रेलमंत्री लालबहादुर शास्त्री का रात्रि को रतनबिहारी पार्क में भाषण था। ठेठेरा बाजार स्थित महाराज की कोटड़ी के पास श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रंथालय के छात्रावास में हम रहते थे। ठीक सात बजे हम भाषण सुनने पहुंच गये।

वहां छोटे-छोटे तख्तों का एक सामान्य मंच बनाया गया था। छोटा सा माइक लगा हुआ था। यह मेरा पहला अवसर था जब मैंने शास्त्रीजी को देखा, सुना। चांदनी सी हंसी और स्वच्छ सौम्य शान्ति उनके कान्तिमान चेहरे पर थी। वह असाधारण व्यक्तित्व वाला साधारण आदमी हमारे बीच बड़ा ही सहज और सामान्य लगा। श्रोता आड़े-टेढ़े खड़े-बैठे थे। भीड़ की अलियों-गलियों में धक्के खाता मैं किसी प्रकार मंच तक जा पहुंचा। मैं भी उन जैसा ही नन्हा था। मेरी जेब में एक नन्ही सी डायरी थी। मैं उसमें उनके हस्ताक्षर लेने को उत्सुक बना हुआ था।

शास्त्रीजी का भाषण चल रहा था। सब लोग शान्त भाव से सुन रहे थे। मेरे मन में यह उथल-पुथल मची हुई थी कि भाषण के बाद मैं कैसे उन तक पहुंचूंगा। कैसे उनसे हस्ताक्षर कराऊंगा। कोई पकड़ लेगा, डांट देगा तो मेरा क्या होगा।

लेकिन मैं मन से निडर था सो अपने साथी को इशारा कर मंच पर शास्त्रीजी के पास जा खिसका। दो-चार मिनट बैठा रहा। इस बीच मैंने तीन बार उनके जब्बे की किनारी को छुआ और चुपचाप खिसकते-खिसकते नीचे चला आया। जो डर पहले था वह जाता रहा और मैं साहस से भर गया। साथी से बोला- 'चुपचाप देखा करना, चार बार और उनका जब्बा छुऊंगा।' यह कह मैं पुन: गया और कुछ ही देर बाद उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया ही कि मैं फट् से उनके पास पहुंच अपनी डायरी उनके हाथ में कर दी। उन्होंने बड़े ही शान्त भाव से मेरी ओर देखा। अपने हस्ताक्षर किये। नीचे तीरीख लिखी। डायरी मुझे देते हुए उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, 'खूब पढ़ो-लिखो।' आसपास के सब लोग मुझे देखते रह गये। मैं धन्य हो गया।

आज भी वह डायरी मेरे पास संभली हुई है। कभी-कभी उसे खोलकर मैं शास्त्रीजी के हस्ताक्षर देख लेता हूं और पुन: यथास्थान रख देता हूं। सोचता हूं, शास्त्रीजी के वे हस्ताक्षर, उनसे हुई भेंट, मेरी पीठ की थपथपी और उनके बोल और वह क्षण, वह माहौल और बीकानेर का मेरा वह अध्ययन काल, छात्रावास में बाबूजी भैंरोदानजी जेठमलजी सेठिया का हमारे पर असीम कृपा-भाव ; न जाने कितने पक्ष हैं जिनका मेरे जीवन-निर्माण में योग रहा और आज भी मैं उनसे जैसे अमिय-रस पा रहा हूं।

करंदीकर ने कई पापड़ बेले

शब्द रंजन के गत अंक 16 में गजानन विष्णु करंदीकर की 9 जुलाई 1976 को हुई भेंट की जानकारी दी। इससे पूर्व 6 जुलाई को भी मेरी उनसे लम्बी बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि उदयशंकर के साथ सन् 1941 से 1951 तक कार्य किया। प्रारंभ में उदयशंकर पेंटर थे पर नृत्यकार बनने की कल्पना उनके मन में थी सो लंदन जाकर उन्होंने नृत्य करना शुरू किया। वहां एक रसियन डांसर एनापावलो थी जो एक दल चलाती थी। उसका 20-25 कलाकारों का दल था। 8-9 वादक थे। सितार, सरोद, तबला तरंग, तबला बजाने वाले के अलावा दो बांसुरी वादक थे। करंदीकर ने उदयशंकर के साथ इंग्लैण्ड, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, चीन की यात्रा की। उदयशंकर इन्द्र, सपेरा, कार्तिकेय के प्रदर्शन स्वयं करते थे। ग्रुप में राधाकृष्ण, भील, विलास, शिवमंडल, किरातार्जुन का रोल था। 45 मिनट का एक बेले होता था। उदयशंकर उदयपुर में जन्मे सो उदय नाम रखा। शंकर इनका टाइटल है। पिताजी झालावाड़ में दीवान थे जो बंगाली ब्राह्मण थे।

करंदीकर बाद में लिटिल बेले ट्रूप में रहे और फिर इण्डियन नेशनल थियेटर में भी रहे। उसके बाद अहमदाबाद में बच्चों के लिए तबला क्लास प्रारंभ की। करंदीकर ने ओंकारनाथ ठाकुर, विनायक राव पटवर्धन, रजबअलीखां, विलायतखां, नारायणराव व्यास, रामकृष्ण, गजाननराव जोशी के साथ तबला संगत की। गीता पर प्रवचन करते। अच्छे ज्योतिषी थे। चेहरा देखकर, हाथ देखकर, कुण्डली देखकर भविष्य कथन करते। मिमिक्री भी करते। पशु-पक्षियों की आवाजें निकालने में भी प्रवीण थे।

अपनी उम्र 67 बताते हुए करंदीकर ने बताया कि वे पांच हजार कार्यक्रम दे चुके हैं। नानासाहेब पान्से माने हुए पखावजी थे। वे इन्दौर के थे। उनके ये शिष्य रहे। नागान गांव में पांडवा अठवेल थे। उनसे पखावज तथा अठवले के शिष्य पांडवा लेले से तबला बजाना सीखा। तब ये मात्र बारह वर्ष के थे। भजन कीर्तन के समय ये ढोलक बजाया करते थे। बोले जिंदगी में कई पापड बेले। करंदीकर बड़े हास्यजनित प्रकृति के थे। कद छोटा था। बातचीत करते समय हंसमुख तथा अभिनय परक चालढाल से बड़ी आकर्षक , यारबाज और मस्ताना छवि लिये मेरे से घुलमिल गये थे।

हमारे आजीवन सदस्य राजकुमार जैन 'राजन'

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के एक छोटे से गांव आकोला में राजकुमार जैन 'राजन' का जन्म 24 जून 1969 को हुआ। हिन्दी में एम. ए. राजन जितनी गहराई से भारतीय जीवन बीमा निगम में अपनी पैठ दिये हैं उतनी ही ऊंडाई से ऊंचाई लिये बालसाहित्य लेखक के रूप में पहचान बनाये हुए हैं।

एक दृष्टि से वे बालसाहित्य के लिए समर्पित पर्याय ही बने हुए हैं। हिन्दी राजस्थानी में उनकी लिखी बालसाहित्य विषयक तीन दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। वे पहले लेखक हैं जिनकी पुस्तकों का अनुवाद पंजाबी, मराठी, उड़िया, गुजराती, अंग्रेजी, कन्नड़, तमिल, सिंधी और संस्कृत भाषा में हुआ है।

राकेट, टाबर टोली, बाल वितान, बालवाटिका जैसी बाल पत्रिकाओं के अलावा श्रमण स्वर, साहित्य समीर, राष्ट्र समर्पण जैसी पत्रिकाओं से भी राजन जुड़े हुए हैं। यही नहीं, हिन्दी बालसाहित्य की उत्कृष्ट पुस्तकों पर विभिन्न नामों से प्रति वर्ष अनेक पुरस्कार देते हैं। अपने स्वयं के नाम का राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन स्थापित कर उसके माध्यम से साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवा-कार्य कर रहे हैं।

बालसाहित्य की स्वयं के अलावा अन्य लेखकों की पुस्तकें भी प्रकाशित कर राजकुमार देश के विभिन्न अंचलों में श्रेष्ठ रूप में कार्यरत शिक्षा संस्थानों में प्रतिवर्ष समारोहपूर्वक पुस्तकों के सेट भेंट करते हैं। अब तक वे 40 हजार की कीमत के सेट वितरित कर चुके हैं ताकि बच्चों का शैक्षिक चारित्रिक विकास हो सके और कुछ अच्छा कार्य करने को प्रेरित हो सकें।

हिन्दी बालसाहित्य की उत्कृष्ट पुस्तक पर अखिल भारतीय स्तर पर 21 हजार रूपये का सोहनलाल द्विवेदी पुरस्कार देने के अलावा चन्द्रसिंह बिरकाली, डॉ. राष्ट्रबन्धु, डॉ. श्रीप्रसाद, डॉ. बालशौरि रेड्डी, अम्बालाल हींगड़ तथा इन्द्रादेवी हींगड की स्मृति में 5-5 हजार का पुरस्कार तथा अन्य एक दर्जन पुरस्कार देने वाले राजन एकमात्र अकेले व्यक्ति हैं।

इतने सम्मान देने वाले राजन को अपने द्वारा सृजित साहित्य पर कई संस्थानों ने सम्मानित किया जिनकी संख्या तीन दर्जन से भी अधिक गरिमा-गौरव लिये है।

यह महत्वपूर्ण पक्ष है कि राजन ने अपना गांव नहीं छोड़ा है। आकोला गांव की गंध लिये वे पूरे देश में उसकी सुगंध फैला रहे हैं। उनका अपना चित्रा प्रकाशन है। वे देश के अलावा विदेश के भी कई स्थानों की यात्रा कर चुके हैं। जहां भी जाते हैं अपने अनुभव बांटते हैं और साहित्य के सरोकारों से परिचित होते सहज सौम्य बने रहते हैं। उनका पता है- चित्रा प्रकाशन, आकोला, चित्तौड़गढ़, राजस्थान-312205 और मोबाइल सम्पर्क- 09828219919 है।

मधुमती का दीनदयाल उपाध्याय विशेषांक लोकार्पित

उदयपुर। राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिक 'मधुमती' के दीनदयाल उपाध्याय विशेषांक का लोकार्पण अकादमी के नवनिर्मित एकात्म सभागार में किया गया। मुख्य वक्ता पेसिफिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीपी शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन को प्रासंगिक, उपयोगी तथा मौजूदा समस्याओं का सटीक समाधान बताया।

मुख्य अतिथि सिद्ध श्रीधर पराडकर ने कहा कि पंडित उपाध्याय का विचार व्यक्ति से पहले राष्ट्र के संवर्धन का था। उन्होंने सामाजिक बदलाव की क्रांति का सूत्रपात किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि मोहनलाल सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. जेपी शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को एक विशिष्ट समाज विज्ञानी और कुशल अर्थशास्त्री बताया। अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष ने बताया कि मधुमति के इस विशेषांक को 4 हिस्सों में प्रकाशित किया गया है। इस अवसर पर सिंधी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विपिनचंद्र का अभिनंदन किया गया। अकादमी के सचिव डॉ विनीत गोधल ने स्वागत तथा संचालन डॉ नवीन नंदवाना ने किया।

स्मृतियों के शिखर (38) : डॉ. महेन्द्र भानावत

उदयपुर महारानी के शाही शिकार

महारानी साहिबा ने लगभग 15 शाही शेरों का शिकार किया। इनमें सबसे बड़ा शेर 300 सेंटीमीटर लम्बा और सवा सौ सेंटीमीटर ऊंचा था। यह सुनहरी शेर था जो संवत् 1999 की पौष शुक्ल 10 को मारा गया। महारानी साहिबा को शिकार का शौक इतना जबर्दस्त था कि उन्होंने अपनी साड़ियों में भी समग्र शिकार-दृश्य को सलमाया-सितराया। शिफोन कपड़े पर कढ़ी हुई बेशकीमती कुछ ऐसी साड़ियां सीताबाई ने मुझे दिखाईं जिनमें जयसमुद्र तथा चित्तौड़ के शिकारगाह तथा शिकार के दृश्य झिलमिलाते बड़ा आकर्षण लिये थे।

भूतपूर्व मेवाड़ राज्य की महिमा न केवल शौर्य-पराक्रम की दृष्टि से, अपितु धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य और लोकानुरंजन की दृष्टि से भी ख्यात-प्रख्यात रही। यहां के अनेक नरेशों ने भारतीय वांग्मय के विविध पक्षों को समृद्ध एवं श्रीसम्पन्न बनाने में उल्लेखनीय योग दिया। महारानी बिरदकुंवर इसी मेवाड़ राजघराने की धर्मनिष्ठ महिला थीं जिन्होंने एक ओर अपनी मेवाड़ी बोली में लोकगीतों की चाल पर धार्मिक-आध्यात्मिक गीतों की रचना कर अपनी भावना को भजनाया, वहीं शाही शिकारी के रूप में भी अपनी अद्वितीय छाप छोड़ी। चौदह वर्ष की उम्र में उनका विवाह महाराणा भूपालसिंह के साथ कर दिया गया।

वह 15 नवम्बर 1977 का दिन था। मैं सुबह कोई आठ बजे ठाकुर निर्भयसिंहजी से मिलने पंचवटी स्थित उनके बंगले पहुंच गया। मेवाड़ महाराणाओं की शिकार सम्बंधी कई दिलचस्प बातों के बीच उन्होंने मुझे बताया कि रानियों की शिकार कथाएं अधिक नहीं सुनी गई किन्तु वर्तमान राजमाता साहिबा बड़ी अचूक निशानेबाज रहीं जिन्होंने कई शाही शिकारें कर बड़ा सुयश अर्जित किया।

उनसे यह सुन मेरी उत्सुकता बढ़ गई। फलस्वरूप मैं दूसरे ही दिन अपने साथ भारतीय लोककला मंडल के मुख्य कलाकार तोलाराम को लेकर राजमाता के निवास स्थान सर्वऋतु विलास पहुंच गया। तोलाराम पूर्व में महाराणा भूपालसिंहजी के फरासखाने में रह चुका था।

महारानी की मुख्य सेविका सीताबाई ने मेरे द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों का राजमाता की सहमति लेकर उत्तर दिया। उसने बताया कि शिकार की प्रेरणा महारानी साहिबा को महाराणा भूपालसिंहजी से प्राप्त हुई। पीछोला झील में बने जगनिवास महल (वर्तमान में लेक पैलेस होटल) में जब महाराणा साहब बिराजते, तब पानी में लकड़ी के बड़े-बड़े गोटे छुड़वा देते। ये गोटे गुलाल से भरे होते। महाराणा साहब अपनी बंदूक के निशाने से इन गोटों को फोड़ने का खेल रचते। इसी खेल में उन्होंने महारानीजी की दिलचस्पी पैदा की। निशाना लगाना सिखाया। यह सब सीखने में महारानीजी को अधिक समय नहीं लगा। तुरत-फुरत में ही इतना अच्छा निशाना लगाने के कारण एकबार तो हमें भी लगा कि जैसे ये पहले से ही सीखी हुई हैं, पर पूछने पर हमारी बात निर्मूल ही सिद्ध हुई। यहीं महाराणा साहब ने फरमा दिया था कि आगे की शिकारों में महारानी साहिबा के शिकार की भी विशेष व्यवस्था हो।

हर समय शिकार के दौरान साथ रहने वाली सीताबाई ने बड़ी दिलचस्पी लेकर जो हाल बताया, मुझे लगा कि मैं भी उन शिकारों का प्रत्यक्षदर्शी बन गया हूं। बोलीं, घने जंगलों में जहां शेर, सूअर आदि जानवरों की बहुतायत होती, वहां शिकार के लिए शिकारगाह बना दिये जाते। ये शिकारगाह मूल अथवा ओदी के नाम से जाने जाते। ये ओदियां जनाना तथा मरदाना दोनों तरह की बनी हुई होतीं। विविध स्थानों पर बनी ओदियों के विशिष्ट नाम हैं, जो आज भी सुने जाते हैं। यथा- उदयपुर की खास ओदी, दीवान ओदी, रंगबुर्ज, बड़ा ना'रा, छोटा ना'रा, चौपड़ का मूल, लखू मूल, सफेद मूल, लाल मूल ; चित्तौड़ की सुखझर, आमझर, हथनी बोकड़्या ; जयसमंद की सलाड़ाकोट धामदर आदि नामी ओदियां। सफेद ओदी मुहूर्त के शिकार के लिए जानी जाती।

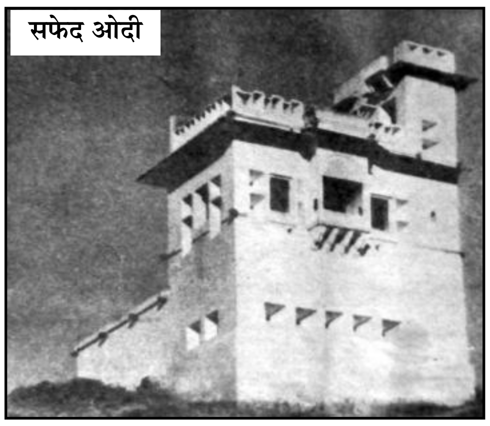
सफेद ओदी

शिकार सदैव महाराणा के साथ ही होता। महाराणा मूल की छत पर विराजमान होते। जरूरत माफिक कभी-कभी उनके लिए अलग से मांडा बनवा दिया जाता। यह मांडा पेड़ पर बना मचान होता, जिसे वृक्ष की चार-पांच डालियों के बीच खाट की तरह बनाकर मजबूत रस्सी से अच्छी बुनावट में बुन दिया जाता।

महारानी साहिबा का पहला शिकार सूअर का था। यह सूअर वजन में लगभग 272 किलोग्राम का था। नाहर मगरा रंगबुर्ज से किये गये इस शिकार में महाराणा साहब महारानीजी के पास ही बिराजमान थे।

शाही शिकार के लिए महीने दो-दो महीने पहले से ही शाही तैयारियां प्रारंभ हो जातीं। शिकार को देखने-भालने वाले पहले से वहां तैनात रहते। उनके पास एक प्रकार का कांच होता जिसे हेलोग्राफ कहते। इस पर सूरज की किरणें डालकर, उसका चलका कर शिकार होने न होने की सूचना देते। शिकार होता तो महलों में भाल आ जाती।

जिस स्थान पर शिकार के लिए पधारना होता उस स्थान की भलीप्रकार देखभाल कर ली जाती। कौन शिकार है? कब आता है? उसे कैसे मूल के पास लाया जा सकेगा? कितना समय लगेगा? शिकार से पहले और बाद में किन-किन बातों का ध्यान रखा जायेगा ताकि शिकार को किसी भी बात की भनक तक न पड़े। इन सब कार्यों के लिए कई व्यक्ति तैयार रहते जो अपने-अपने काम में प्रवीणता लिये होते।

शिकार में नौकरिये होते जिनका काम हाका देकर शिकार को निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचाना होता। ये लोग एक-एक मीटर की दूरी पर खड़े रहते जो सारे जंगल को घेर लेते। इनके अलावा टौकिये होते। ये प्राय: वृक्षों पर बैठते और इस बात की पूरी निगरानी रखते कि कहीं शिकार सबकी आंखों में धूल झोंक कर चुपकाई-चतुराई से भाग नहीं जाये।

जरूरत के अनुसार बीस-बीस, चालीस-चालीस तक हाथी रहते। एक-एक हाथी पर दो-दो शिकारी बंदूक लिये रहते। शिकार में सहायता के लिए ताजी कुत्ते होते। एक कुत्ते के साथ एक नौकरिया बल्लम लिये रहता। ये शिकारी कुत्ते बड़े साहसी और संगठित होते। छिपे हुए शिकार को ढूंढ लाने, जख्मी हुए जानवर का खून सूंघकर उसका पता लगाने तथा शिकार का पीछा करने में ये बड़े मददगार होते। कभी-कभी तो ठेठ गुफा में जाकर ये शिकार को बाहर ले आते।

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना पोथीखाना पोथीखाना

साहित्य सुधा : डॉ. भानावत की तीन कविताएं

डॉ. नवलकिशोर

डॉ. महेन्द्र भानावत बहुमुखी प्रतिभा के लेखक हैं। उनकी विशेष ख्याति लोकसाहित्य एवं कला के मर्मज्ञ अध्येता के रूप में है लेकिन सर्जनात्मक क्षेत्र में भी वे बहुत सक्रिय रहे हैं। संभवत: कथा को छोड़कर उन्होंने सभी विधाओं में लिखा है। यद्यपि उनकी एक कविता पुस्तक 'कोई-कोई औरत' प्रकाशित हुए कई वर्ष हुए किन्तु कवि के रूप में वे कम ही पहचाने जाते हैं। लोकसाहित्य के विषय में उन्होंने इतना विपुल कार्य किया है कि उनके लेखकीय व्यक्तित्व के अन्य पक्ष लगभग उपेक्षित हो गए हैं। एक क्षेत्र विशेष में बहुमान्य लेखकों को प्राय: ही ऐसी स्थिति से गुजरना होता है। डॉ. भानावत को भी अपने अन्य लेखन के लिए मान्यता धीरे-धीरे ही मिली है। कवि के रूप अभी भी वे बहुचर्चित नहीं हैं लेकिन उनकी क्षमता को पहचाना जाने लगा है। अभी उनके द्वारा पढ़ी गईं कविताएं उनकी रचनात्मक क्षमता का अच्छा प्रमाण हैं।

'नहीं-नहीं करते' में कविता की सार्थकता के बारे में भानावतजी ने एक बिल्कुल नए अन्दाज में अपना बयान दिया है। हर चिन्तनशील लेखक को साहित्य की उपादेयता का सवाल कभी-न-कभी बेचैन करता ही है। रचना-कर्म का सांसारिक सफलताओं के लिए कोई महत्व नहीं, अत: दुनियायी दबाव एक लेखक को बाध्य करते हैं कि वह साहित्य और कला के प्रति समाज में व्याप्त मूढ़ता से बार-बार जूझे। इस जूझने में ही उसका उत्तर निहित होता है। उत्तर की मौलिकता ही किसी लेखक के वक्तव्य को महत्वर्पूण बनाती है- बावजूद इस तथ्य के कि उस तरह के वक्तव्य का संदेश चिर-परिचित होता है। कोई वक्तव्य किस तरह महत्वपूर्ण बनता है, उसे स्पष्ट करने के लिए इसी सवाल का जो जवाब स्व. जैनेन्द्रजी ने दिया है, उसे यहां उद्धृत करने का मोह हो आया है-

'कहानी लिखी गई, पढ़ी गई, मनोरंजन हो गया पर रोटी तो नहीं मिली। आप पूछें कि तब साहित्य की बात क्यों की जाती है? पेट भरने का, रोजगार का कोई नुस्खा बताइये। बाद में आर्ट को भी देखेंगे। जिस चीज की चाह नहीं, वह आप नहीं मांगते। हवा आप नहीं मांगते। यदि आपमें साहित्य की मांग नहीं हो तो हो सकता है कि आप अपनी असली आवश्यकताओं से आंख फेरे हुए हैं। साहित्यिक आपके ख्यालों की दुनिया को साफ रखता है। साहित्य हमारी सुख और भोग की भावनाओं से ऊपर है।' जैनेन्द्रजी ने यहां साहित्य को हवा की तरह जरूरी बताया है जो हमारे ख्यालों की दुनिया को साफ रखता है।

भानावतजी की कविता में श्रीमती और डॉक्टर सुख-भोग की दुनिया के प्राणी हैं, जिन्हें यह समझ नहीं कि -

दवाई जीवन नहीं, कविता ही जीवन है
सूर, तुलसी और मीरां आज भी दवाइयों से नहीं
कविताओं से जी रहे हैं।

शुरू का मजाकिया लहजा और बाद का सूफीयाना बयान विडम्बना से गंभीरता की ओर ले जाता है। परहेज, बीमार, जीवन जैसे साधारण शब्द असाधारण हो उठते हैं और यह छोटी सी कविता एक बुनियादी सवाल का बड़ा जवाब बन जाती है। 'तुम्हारे कहते-कहते' में युद्ध-विरोधी भावना की अभिव्यक्ति दी गई है। जीवन की कविता में प्रकृति और पुरुष का सामंजस्य है। उससे उस अनहद नाद की सृष्टि होती है जो सनातन भी है और अधुनातन भी। युद्ध सिर्फ प्रत्यक्ष दुष्परिणामों का नाम नहीं है-

वे युद्ध क्या युद्ध होते हैं, जिन्हें आदमी लड़ता है!

सुना है तुमने युद्ध की भी एक गंध होती है।

इसलिए जब युद्ध होता है कविता की कोपलों में सिन्धु आ सकता है और आदमी की आंखें रक्तलाई बन अंगारे उगाती हैं। इस प्रकार यह कविता युद्ध का विरोध केवल सतह पर नहीं करती, उस आदिम बर्बरता से साक्षात्कार कराने का प्रयास करती है जिसके प्रभाव में सारी पृथ्वी पगला जाती है। लेकिन इस कविता में कथ्य अन्तर्युक्त नहीं हुआ है, थोड़ा पाठक को जोड़ना पड़ता है।

शब्द, मोह, अर्थ-संगति में बाधक हो गया है। जीवन की कविता में 'अनहद जूझना' का प्रयोग सामरस्य का, शान्ति का वाचक नहीं हो पाता। खजूर, पीपल, नीम साधारण प्रभाव ही उत्पन्न कर पाते हैं। कवि बंहुधा अनकहे से बहुत कुछ कह जाता है पर कभी-कभी जहां कहना जरूरी होता हो, वहां अनकहे से काम नहीं चलता। 'आदमी क्या लड़ेगा युद्ध' और 'कविता की कोपलों में सिन्धु आ सकता है' जैसी पंक्तियां कवि वक्तव्य में कुछ अधूरेपन का ही आभास देती हैं। मेरी दृष्टि में यह कविता एक अच्छी कविता की भूमिका बनकर रह गई है।

'अच्छा होता गांव' एक व्यंग्यात्मक कविता है। भानावतजी के व्यंग्य दिलचस्प होते हैं। गद्य में भी और पद्य में भी। इनमें वे एक ऐसे जागरूक पत्रकार हो जाते हैं जो समाज की व्यथा-कथा कहता होता है। कवि का संवेदनशील मन गांव की हालातों से विक्षुब्ध है और अपने विक्षोभ को वह व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देता है- आदमियों से अधिक मच्छर / मच्छर से अधिक बीमार / बीमार से अधिक श्मशान / श्मशान से अधिक काल और अकाल।

कवि एक भयावहता से हमें अवगत कराता है। पहले पैरा के बाद अर्थात् 'काल और अकाल का / भय फैला होता है' के बाद आखिरी पैरा अर्थात् 'लोग कहते हैं' से 'इस गांव में मेरे देश की मूल आत्मा है' तक की पंक्तियां ही इस कविता में होती तो कविता अधिक गठी हुई होती। व्यंग्य अधिक प्रखर होता और अनकहे से बहुत कुछ कहा गया होता। बीच का अंश अप्रासंगिक नहीं है।

अवांछनीय भी नहीं है पर बहुत जरूरी भी नहीं है बल्कि एक तरह से गैर जरूरी है क्योंकि अतीत मोह के एक नोस्टेलजिया में वह हमें ले जाता है-युगों से भारतीय गांव की असलियत ऋतुओं के रंभाने और हवा के सर्राटों में नहीं 'कीचड़' में है। पन्तजी ने कहा था- 'भारतमाता / मिट्टी की प्रतिमा / उदासीन' वह आज भी सच है। इस सच की बड़ी खरी तस्वीर भानावतजी की इस कविता में है। मेरी आलोचना केवल उसे और सुगठित रचना के रूप में प्रस्तुत करने के सुझाव को लेकर है।

भानावतजी की उक्त कविताएं सहज भाषा और सहज अर्थ-संकेतों के लिए प्रशंसनीय हैं। लोकसाहित्य की सहज समृद्धि भी उनकी कविता में आएगी, ऐसी अपेक्षा हम उनसे कर सकते हैं।

आकाशवाणी उदयपुर से साहित्य सुधा के अंतर्गत 6 जनवरी 1989 को प्रसारित।

स्वर्णिम भारत में अणुव्रत की चेतना

तेरापंथ धर्मसंघ का पिछले 62 वर्ष से प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र 'अणुव्रत' का यह अगस्त-सितम्बर का संयुक्तांक 340 पृष्ठों की मूल्यवान देन लिये है। विशेषांक का प्रमुख रुझान स्वर्णिम भारत और अणुव्रत केन्द्रित है।

देश में अनेक ऐसी पत्रिकाएं हैं जो प्रारंभ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हुई पर आगे जाकर मासिक से त्रैमासिक और वार्षिक बन ओझल हो गईं। ऐसे में अणुव्रत की यह बलिहारी ही कही जायेगी कि वह अपने शुभंकर वेग से अहर्निश बना शानदार सफर लिये है। कई विशेषांक उसके बड़े मानदण्ड साबित हुए हैं और यह कहना जरूरी होगा कि अहिंसक नैतिक चेतना के प्रसार में यह अपने उदात्त लक्ष्य में कामयाब है।

यह विशेषांक पांच भागों में मांडा गया है। पहले 'राष्ट्रीयता' में तीस, दूसरे 'जीवनशैली' में अड़तीस, तीसरे 'समाज' में सत्ताइस, चौथे 'अध्यात्म' में सत्ताइस तथा अंतिम पांचवें 'आर्थिकी' में ग्यारह लेख सम्मिलित हैं। अतिथि संपादक ललित गर्ग ने सम्पादकीय में अणुव्रत आंदोलन को नये भारत का सूर्योदय कहते हुए उत्तेजनात्मक धरातल पर सत्यांश सवाल उठाया कि नया भारत कैसा बनाना है जिसके लिए हममें कितनी इंसानियत आई है। बुराइयां रूप बदल-बदल कर नये मुखौटे लगाकर आती हैं जिन्हें शांति व अहिंसा प्रिय नागरिकों को भुगतना पड़ता है। अणुव्रत का दर्शन है कि लोक सुधरेगा तो तंत्र सुधरेगा। व्यक्ति का रूपांतरण

होगा तो समाज का रूपांतरण होगा।

आजादी के बाद न जाने कितने धर्मसंघ, आचार्य, महामानव, साधु-संत, उपदेशक और व्याख्यानप्रदाता हुए। सब भिन्न-भिन्न शब्दों में यही-यही कह रहे हैं। कथन सभी को आकृष्ट करता है पर समस्या जस की तस बनी रहती है और उपदेशक उपदेश ही देता रहता है। उसे पता नहीं, उसका कहा कितने लोग केवल सुन रहे हैं। सुन भी रहे हैं या नहीं। सुनकर शालीन हो रहे हैं या शून्य-सुन्न। कितना आज तक बदलाव आया है। आयेगा भी या कि नहीं। तब कोई क्या करे!

इस विशेषांक में जितने भी लेख हैं, कमोबेश अच्छी बातें कह-लिख कर अंत में निराशा ही प्रकट करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने अच्छे इंसान कैसे बनें? में कहा है- 'आदमी को सच्चाई की ओर ले जाना और उसे भ्रांतिमुक्त करना किंतु धर्म के लोग भी भ्रांतियों की गिरफ्त में आ गये।

आज धर्म के लोग ज्यादा भ्रांत हैं। उनमें से ज्यादा कन्फ्यूजन है।' यदि आज वे हमारे बीच होते तो उनका कहा शत-प्रतिशत सही लगता। जिन बाबाओं, धर्मगुरुओं तथा समाज उद्धारकों ने अपने को इंसान वेश में भगवान कह मानव उद्धारक के रूप में प्रस्तुत किया, वे ही सर्वाधिक पतित, पथभ्रष्ट तथा अमानवीय करतूतों के अगुवा निकले।

नये भारत के लिए नये संकल्प लेख में डॉ. वेदप्रताप वैदिक का यह कथन- 'सबसे पहला संकल्प यही करें कि न तो हम रिश्वत देंगे और न ही लेंगे। प्राय: रिश्वत तभी दी जाती है जब हम कोई गलत काम करवाना चाहते हैं। किसी नियमपूर्ण काम के लिए रिश्वत मांगी जाये तो उसके विरूद्ध लड़ें।'

उनका यह कथन यथार्थ से बहुत परे है। वे भारतीय साहब, बाबू और उसमें निवास करने वाली गरीब से गरीब आत्मा से परिचित हैं। कौन रिश्वत देना चाहेगा? देने के लिए कितने वासी हैं जिनके पास कुछ है मगर जब गला दबता है तब अपनी स्वांस बंद करने को कितने लोग आगे आकर बहादुरी दिखायेंगे।

अब तो रिश्वत लेने वालों के चेहरे तक अखबारों की सुर्खियां बन रहे हैं तब व्यक्ति क्या करेगा? शान से जीने का उपक्रम कैसे करेगा? पीसना तो छोटों को ही पड़ता है। बड़े लोग तो बड़ पीपल हो जाते हैं।

ऐसे में अणुव्रत की इतनी लंबी सफर में न जाने कितने अणुव्रती बने होंगे। कितने अणुव्रत के विभिन्न नाम संबोधनों से नवाजे जा चुके होंगे। कितने लोग देश में और विदेश में भी अणुव्रत के निष्ठावान प्राचारक बन गये होंगे और न जाने कितनी संगोष्ठियां, सम्मेलन, मेलमिलाप, मिलनप्रसंग, सभा, सम्मान समारोह आयोजित हुए होंगे। न जाने कितने विद्वान, महामनीषी, बड़े-चढ़े लोग, सर्वोच्च सत्ताधारी पुरुषों ने अणुव्रत को सुन, स्वीकारा, सराहा, अंगीरस किया और उसके प्रचार-प्रसार में भागीदारी दी होगी! किंतु क्या तब भी कहने को, बताने को कोई ऐसा व्यक्ति, स्थान या चिन्ह हमारी नजरों में है जिसके लिए हम उदाहरणस्वरूप कह सकें कि यह ग्राम, व्यक्ति, समूह, समाज या संत-महंत मात्र हमारे लिए ही नहीं, दूसरों के लिए, सबके लिए आदर्श एवं प्रेरणास्तोत है।

सोने के सिंहासन पर बैठकर स्वर्णिम बात ही कही जाती है। वही शोभती भी है और मनसुखी भी लगती है। तब पीतल भी सोना बना लगता है। लोहा सुहागा जैसा लगता है किंतु यथार्थ की धरती पर आकर देखने से कुछ और ही लगता है। सवाल यह है कि यथार्थ को देखने के लिए आदर्श बनी आंखें काम नहीं देतीं और यथार्थ की आंख यथार्थ ही देख पाती है। आदर्श उसके सपनों, उसकी कल्पनाओं से कोसों दूर होता है।

इस दृष्टि से स्वर्णिम भारत और स्वर्णिम अणुव्रत दोनों को देखने के लिए हमें क्या अलग से विचार नहीं करना होगा और वह कौनसी दृष्टि होगी जिसके बल पर उसके यथार्थ को खोजा जा सकेगा।

-सत्पुरुष

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 अक्टूबर 2017

सम्पादकीय

अब वह कविता कहां

कविता के बारे में जिससे भी सवाल किया जाता है वह यही कहता पाया जाता है- अब कविता कहां? कविता तो पहले थी जो वर्षों तक पैठ जाती और गायेबगाये जीवन के कई सन्दर्भों में उदाहरण बन जाती। वे कविताएं स्वयं जीतीं और अन्यों का जीवन भी प्रशस्त, मृदुल एवं खुशहाल बनाती थीं। इसीलिए पाठ्यक्रमों में उनको पढ़ाया जाता तब भी वे लय राग छंद की धड़कन लिए नवीन रसानुभूति देतीं।

लेकिन वह दौर समाप्त हो गया लगता है। इसका कारण क्या रहा? कविता के साथ ही ऐसा क्यों हुआ? गंभीरता से सोचें कि क्या यह बदलाव के साथ ही हो रहा है या साहित्य की अन्य विधाओं के साथ भी हुआ, हो रहा है याकि और भी बहुत सारी चीजें, जो कुछ रचाव सृष्टि का, सृष्टि में हम देखते आ रहे हैं, वह बदल रहा है। इस बदलाव का ठौड़ कहां है? कौन है? इन सबके मूल में कौन है जो इस बदलाव को भाख रहा है। महसूस करता, व्यक्त कर रहा है। कई बार हम उन ग्रंथों का, शास्त्रों का उद्धरण देते हैं तो वे कहां से आये? किसकी देन हैं? कौन पढ़ रहा है? लिख रहा है? उन्हें समझ रहा है और उनका भाष्य कर रहा है?

सबके मूल में बैठा-पैठा मनुष्य है। अदृश्य शक्ति जो भी हो पर दृश्य में उस अदृश्य का भी प्रतिनिधि मनुष्य ही है। मनुष्य के अलावा अन्य जितने भी प्राणी हैं, जीवनांश हैं उनके पास वाणी नहीं है। जो वाणी जनित संकेत हैं उनका उथला अन्य कोई नहीं कर सकता।

पशुओं की वाणी पशु तो समझते हैं पर उसी बरादरी वाले। पक्षियों की भाषा पक्षी समझते हैं पर उसी बरादरी वाले। मनुष्य सबसे बड़ा प्राणी है जो अपनी वाणी रखता है और पराई वाणी को भी समझने की चेष्टा करता है, पशुओं की, पक्षियों की, अन्यों की पर जितने भी प्राणी हैं वे निशब्द हैं। वाणी विहीन हैं। भाव-रस विहीन हैं।

समय के अनुसार वह सब देने वाला, कहने वाला, लिखने-पढ़ने, गाने, सुनाने वाला मनुष्य बदला तो उसका परिवेश, उसकी सोच, समझ और मजमून भी बदला। इन सबमें साहित्य के सोपान पर चढ़ी कविता का सर्वाधिक महत्व है। कारण कि वह भावना प्रधान, कल्पना प्रधान, लय, छंद, रस प्रधान है इसलिए उसके सम्बंध में शास्त्रकारों ने, मसिजीवियों ने सर्वाधिक लिखा। सर्वाधिक प्राथमिकी के रूप में कविता ही आई। उसी का रचाव हुआ।

अब जीवन की प्राथमिकताएं बदल गईं। उसके मूल सरोकार और मनुष्य की जिजीविषा की शिराएं भी बदल गईं तो कविता ने नया रूप, नया मोड़, नई चाल और नई दिशा ली तब भी उस दिशा में भी जब तक राग, रंग, धुन, लय का सांगीतिक संकेत भी यदि है तो वही कविता, वही गद्य, वही कथन सबके लिए ग्राह्य होगा। कविता ही नहीं, गद्य बनी कविता में भी उन तत्वों के मसाले जरूरी हैं। मसालों के स्वाद की तरह कविता के स्वाद भी अब बदल रहे हैं।

राजस्थान पर्यटन विभाग को मिले दो राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार

उदयपुर। राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राजस्थान पर्यटन विभाग को दो अलग-अलग श्रेणियों में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार 2015-16 प्रदान कर सम्मानित किया। राष्ट्रपति एवं के.जे. अल्फोंस, राज्य मंत्री (आईसी) से यह पुरस्कार राजस्थान की पर्यटन मंत्री श्रीमती कृष्णेंद्र कौर 'दीपा' तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव निहाल चंद गोयल ने ग्रहण किये।

श्रीमती कृष्णेंद्र कौर 'दीपा' ने कहा कि दो अलग-अलग श्रेणियों में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजेजी के गतिशील नेतृत्व के तहत हमारे सतत प्रयासों की पहचान है। वसुंधरा राजेजी ने दुनियाभर के पर्यटकों के लिए राजस्थान को सबसे पसंदीदा स्थानों में से एक बनाने के लिए और इन पुरस्कारों को राजस्थान की पर्यटन अनुकूल नीतिगत पहल के लिए भी एक प्रमाण दिया है। इन पुरस्कारों के साथ राजस्थान को तीन अन्य श्रेणियों में भी पुरस्कार मिले। बेस्ट होटल फाइव स्टार डीलक्स केटेगरी में उदयपुर की द ओबेरॉय उदय विलास (संयुक्त विजेता), ग्रांड केटेगरी में फतह प्रकाश पैलेस, उदयपुर और बेसिक केटेगरी में सामोद हवेली, गंगापोल, जयपुर को भी पुरस्कृत किया गया।

जन-मन के कवि माधव दरक

माधव दरक ऐसे पहले कवि हैं जिनकी कविताएं सुन कलकत्ता के प्रवासी कमलकुमार दुग्गड़ ने तीन वर्ष तक दस हजार रूपया प्रतिमाह भेजा ताकि वे शरीर से स्वस्थ रहकर अपने कवि-धर्म का बखूबी निर्वाह करते रहें।

सन् 1980 से माधव दरक को अति निकट मन से जान रहा हूं। उदयपुर उनका मुख्य जंक्शन है जहां होकर वे दूर-सुदूर तक के कविसम्मेलनों की शोभा बनते हैं। उनकी 'एड़ो म्हारो राजस्थान' नामक कविता ही उनकी पहचान बन गई है। वे जहां भी जाते हैं, इसी की फरमाइश होती है और वे भी सुना-सराहा और वर्तमान अरविंदसिंहजी मेवाड़ ने तो उन्हें सुनकर उनकी तीन पुस्तकें ही प्रकाशित करवादीं। ये पुस्तकें हैं- शिवदर्शन, मेवाड़ दर्शन और एड़ो म्हारो राजस्थान।

माधव दरक ऐसे पहले कवि हैं जिनकी कविताएं सुन कलकत्ता के प्रवासी राजस्थानी कमलकुमार दुग्गड़ ने

सैकड़ों बार इसे सुनाकर दर्शकों की चाह पूरी कर चुके हैं। उदयपुर में वे जब भी फुर्सत पाते हैं, मुझसे अवश्य मिलते हैं और बानगी के तौर पर वे सारी रचनाएं उसी तन्मयता, दिल्लगी और स्नेहिल मन से सुनाते हैं जो नई-पुरानी उनकी पसंदीदा होती हैं। यह उनकी सशक्त सहृदयी मैत्री का मंगलभाव ही है।

माधव दरक अब 83 वर्ष की पकी उम्र लिये हैं। हम सभी उसी दौर के साथी हैं। मोबाईल पर 'मायड़ थारो वो पूत कठै' महाराणा प्रताप पर लिखी कविता सभी इनकी आवाज में सुनकर मुदित होते हैं। स्कूलों में इनके गीतों पर नृत्य शोभित होते हैं। देश का कोई अंचल माधवजी ने छोड़ा नहीं है।

वे जब सत्रह वर्ष के थे तब उन्होंने पहलीबार मेवाड़ महाराणा भूपालसिंहजी के समक्ष उनके दरबार में उपस्थित होकर कुंभलगढ़ पर लिखी कविता सुनाई। अपने कुल दरबारियों के साथ महाराणा अति प्रसन्न हुए और ढाई सौ रूपये का पुरस्कार दिया। 1967 में महाराणा भगवतसिंहजी ने भी उन्हें खूब

तीन वर्ष तक दस हजार रूपया प्रतिमाह भेजा ताकि वे शरीर से स्वस्थ रहकर अपने कवि-धर्म का बखूबी निर्वाह करते रहें। माधवजी को काव्य-सृजन की प्रेरणा अपने पिताश्री काशीरामजी से मिली जो कुंभलगढ़ में एडवोकेट थे। उनका कंठ बहुत अच्छा था और वे मुख्यतया धार्मिक समारोहों में स्तुतियां और स्तवन गाया करते थे। माधवजी ने भी वैसा ही गला पाया। यही कारण है कि बार-बार सुनते हुए भी पुनः-पुनः सुनने की उत्कंठा बराबर बनी रहती है।

माधवजी को अपनी लिखी शिवदर्शन कविताएं बहुत प्रिय हैं जिन्हें वे बड़ी तन्मयता से आंखें मूंद गाते हैं। उन्होंने बताया भी कि अपने गांव केलवाड़ा में ही शिव मंदिर में छह वर्ष तक वे साधना करते रहे और उसी दौरान शिवदर्शन काव्य लिखा। आज वे जो भी हैं, उन्हीं शिव की कृपा मानते हैं। शिव उनके घट-घट और रोम-रोम में बसे हुए हैं और जो भी उसे सुनता है वह उसे श्रेष्ठ काव्य की अनुभवजनित शिवदर्शना की अभिव्यक्ति मानता है।

दिनेश तिवारी उत्कृष्ट सेवा सम्मान से सम्मानित

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम निदेशालय की ओर से दिनेश तिवारी को उनके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के वंचित वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, निदेशक प्रो. मंजू मांडोत, डॉ. हरीश शर्मा द्वारा प्रतीक चिन्ह, शॉल, उपरणा एवं सम्मान पत्र देकर उत्कृष्ट सेवा से सम्मानित किया गया।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि लगन, मेहनत एवं समर्पण भाव से कार्य करने से ही व्यक्ति, संस्था व देश की तरक्की संभव होती है। इस अवसर पर उग्रसेन राव, डॉ. धर्मेन्द्र राजोरा, पुष्पा टांक, डॉ. कौशल नागदा, राकेश दाधीच, देवीलाल गर्ग, के.के. कुमावत, तृप्ता जैन, पीरू कांत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन हेमराज गुर्जर ने किया।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/
मसखरी	199/
लोकदेवता कल्लाजी	15/
अजूबा राजस्थान	60/
कोई--- कोई औरत	15/
मरवण मांडे मारणा	25/
संस्कृति के रंग	25/
लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति	15/
मेंहदी राचणी	25/
आछी करणी पार उतरणी	20/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

खोज-खबर

91 वर्षीय भट्टजी की मसखरी

मसखरी में बूढ़ा दिल भी जवान हो जाता है मगर जो मसखरी में ही लगेपगे रहते हैं वे तो बूढ़े होते ही नहीं ; यह राजेन्द्रशंकर भट्ट ने भी अपने 91 वें वर्ष के अंतिम दिन 27 अगस्त 2010 को मुझे पत्र लिखकर सिद्ध कर दिया। भट्टजी ने सुखाड़िया शासन में लम्बे समय तक सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय में निदेशक के रूप में अपनी सुछवि से उस काल को ही स्वर्णिम बना दिया था।

पत्रकार भट्टजी बाद में अच्छे सुनाम लेखक हो गये थे। वे मुझसे लेखन के कारण परिचित थे और बड़ा आत्मीय स्नेह रखते थे। सदैव मुस्कराते और अपने पूरे बदन को हलचल दिये रहते। उनका गेहुंवारंगी गांधीवादी डीलडौल खद्दर के परिधान में चमकी देता लुभानेवाला था।

मेरे नाम उनका लिखा पत्र मसखरी के जवाब में था। मसखरी नामक पुस्तक होली पर हमझोली मित्र-मसिजीवियों से संबंधित पुछल्लों का सन् 1985 से 2010 तक का संग्रह है, जगह-जगह प्रभावी कार्टूनों से लकदक। भट्टजी ने लिखा- ''इससे अच्छी सौगात क्या हो सकती थी, मैं अपने 91वें वर्ष का अंतिम दिन पूरा कर रहा था जब आपकी 'मसखरी' आयी, अत्यंत आनंदप्रद यह रहा ... कुछ भी कहने के पहले जिन तीन के बारे में कहा गया है, मैं इन्हें ही सबसे अधिक निकटता से जानता था।

इन तीनों की आंतरिक शक्तियों का प्रभाव है कि जिन्हें आप सबने सबसे ज्यादा याद किया है। उनका अति अनुग्रह मुझे इतनी दूर रहनेवाले को भी उतना ही प्राप्त रहा। आतुरजी (डॉ. प्रकाश आतुर) उदयपुर-जयपुर में जब मिलते थे, आतुरता से मिलते थे।

चन्द्रेशजी (व्यास) मेरे लिए दूज का चांद से थे जिनकी अभिलाषा सदा रहती है और नागरजी (जनार्दनराय नागर) ने अपनी अमर रचना (जगद्गुरु शंकराचार्य उपन्यास के दस भाग) के पृष्ठ-पर-पृष्ठ तक सुनाये थे जब उनके तन-मन से वह कागज के पृष्ठों पर आ रही थी। इन तीनों के लिए मेरे और भी अनेक संस्मरण हैं। मैं मन से बड़ा प्रसन्न हुआ इनके संबंध में पंक्तियां पढ़कर।''

पंक्तियां ये थीं जो 'स्मरणांजलि' शीर्षक से सन् 1999 में लिखी थीं-

नागर बिन या नगर की, सूख गई रसखान।
तुम बिन विद्यापीठ की, कौन करे पहचान।।
तुम नहीं चन्द्रेश, लगता हम सभी को आज यूं।
एक हीरा था जो मुट्ठी, सो गया आकाश में।।
आतुर बिन होली दिन लगते, सूने और उदास।
ज्यों बसंत में सूख गया हो, मादक मुखर पलाश।।

मसखरी के पुछल्लों में पूरी तरह रमण करने के बाद भट्टजी ने लिखा- ''ये शानदार पुछल्ले उन दिनों की प्रेरणा और योजना के हैं जब सचमुच में बड़ी मसखरी हुआ करती थी। आप इस पर पूरा अभिमान और अपार आनंद अनुभव कर सकते हैं कि इस 'एक उपलब्धि' को आपने आकार और अस्तित्व दिया है।''

अपने ढाई पृष्ठीय टाइप्ड पत्र में भट्टजी ने अंत में लिखा- ''जिन्होंने होली का पुराना जमाना देखा है उन्हें दुख होता है कि उन्मुक्तता जितनी बंधन में आई है, उतनी ही इसमें गंदगी आई है। मसखरी की रचनाओं में जीवन-तत्व और जीवनी-शक्ति है।

मेरी यह आस्था ही उन सबका आदर है जिनकी पंक्तियों का संयोजन आपने सामर्थ्य और सफलता से किया है। जो चित्र और चित्रण इसके साथ आये हैं, उन्होंने चांदनी को चमकाया है और मुद्रण की सुचारुता ने इसका स्तर उठाया है। मेरी अपार कृतज्ञता इसके साथ है और यह कामना-'रहिबो आनंद नित।''

आये दिन हमारे पास भी ऐसी पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें आती हैं किंतु हम कितना उनका आस्वाद लेते, रसास्वादन करते हैं तथा ठीक से जवाब भी दे पाते हैं। मोबाईल संस्कृति ने शब्द-अर्थ देने की आत्मीय संस्कृति ही मटियामेट कर दी। काश! भट्टजी हमारे बीच बने रहते।

चौथी में चथड़ा चौथ का वह दिन

बालपन की स्मृतियों का अब वरिष्ठपन में आना जलेबी या फिर पेठे का स्वाद आना लग रहा है। पता नहीं, पहले यह चौथ क्यों नहीं याद आई। स्मृतियों का सुख मीठा स्वाद और मीठी खाज की तरह होता है। कोई चौथी क्लास रही होगी। मैं बारह-चौदह वर्ष का रहा होऊंगा। याद आ रही है, थावरीय, शनिवारीय साप्ताहिक सभा में पहलीबार मैंने एक कविता पढ़ी थी जिसकी शुरूआत थी-

'आई बॉलीबाल
विचित्र बहु तुम ही
तुम तो खेलाते रहे'
और अंतिम पंक्ति थी -
'देखन को भल
लगे हु छोटो, मीठू
मन मुस्काते रहे।'

तब के गुरु पं. शीलव्रतजी शर्मा के सान्निध्य-शुभाशीष की इस कविता का जिक्र जब भी उनसे भेंट करने जाता हूं, कभी मैं कभी वे अवश्य करते हैं और अपनी ताजी छंदबद्ध कविता को उसी भावभूमि में गाकर सुखानंद भर देते हैं।

जैन समाज में भादवा सुदी चौथ को संवत्सरी मनाई जाती है। इस दुरुह नाम का सरलीकृत नाम जबान हम बच्चों की पर छमछड़ी चढ़ा हुआ था। इस दिन सुबै ही सुबै नये कपड़े पहन पाठशाला जाते और सभी मिलकर पूरे गांव में फेरी लगाते। गुरुजी साथ होते। कपड़ों में चूड़ीदार पाजामा, लंबी बांहों का कमीज तथा पुट्ठेदार कसीदे वाली टोपी मुख्य होती। प्रत्येक बच्चे में विशेष हुलास होता। हर बच्चे के हाथ में लकड़ी का डंडा होता। इस पर लाल रंग की लाख की पालिश और उस पर गोल-गोल सुनहरी रंग के चकते होते। किसी पर आंकड़-बांकड़ रेखाओं के मनभावन मंडान होते। दोनों हाथों से डंके आपस में टकराते, एक विशेष टंकार देते बड़ी खूबसूरती के साथ गीत के बोल गाते, कभी घोल घूमी लेते तो कभी दूसरे के डंके से टकराहट देते खेलणी करते। गीत अब भी याद है-

छमछड़ी भई छमछड़ी
लैसे घोड़ा लैसड़ी
एक घोड़ो आर पार
जींपै बैठा मियांमाल
मियांमाल री काली टोपी
काला है कसनजी
गोरा है मगनजी
रावजी नंगारो दीधो
जीत्या हड़ूमानजी।

फेरी के समय जिस बच्चे का घर आता, उसके बाहर ठहर जाते और जोर-जोर से डंकों पर खेल गीत गाकर घरवालों का ध्यान खींचते। घर के सभी प्राणी बाहर आकर हमारा उत्साह बढ़ाते। खुश होते और सबका मुंह मीठा कराते। गुरुजी को पाग बंधाते या नारियल भेंट करते। गुरुजी सबके लिए मास्टर साहब की जगह माड़साब नाम से संबोधित होते। माड़साब के लिए और बच्चों के लिए मांगना ठीक नहीं समझ गीत ही में उसकी समझाइश दी हुई होती-

चथड़ा चौथ भादूड़ो।
लादो भाई लाड़ूड़ो।।
लाड़ूड़ा में घी घणो।
दे दो बाई खांडचणो।।
भज्या मुरमरी देवो आय।
थाणो बेटो भणवा जाय।।
भणवा री भणाई दो।
माड़साब ने लाई दो।।
पाग मोठड़ो मन भावे।
गुराणी रे भी चावे।।

जिस बालक का घर होता वह बालक बड़े उत्साह से गुरुजी के धोक दे, तिलक निकाल उन्हें रुपया, नारियल अथवा पगड़ी तथा गुराणी के लिए हैसियत मुजब वेश आदि भेंट करता और प्रत्येक साथी-दोस्त का मुंह मीठा कराता। ऐसे सभी घरों की फेरी दी जाती।

छमछड़ी में एक दिन पहले से बच्चे पूरी तैयारी में रहते। संध्या को घर में मिठाई, लड्डू या फिर बेसन चक्की बनाई जाती। बच्चे हाथों में मेंहदी रचाते। अपनी डंडियों को तैयार करते। इन डंडियों-डंकों के छोटे-छोटे घुघरु भी बांधते। बजाते वक्त उनसे छम-छम की कर्णप्रिय ध्वनि निकलती।

राजस्थान के अन्य भागों में भी यह त्यौहार मनाया जाता। ब्रज के गांवों में भी इसकी हवा देखी जाती। चथड़ा चौथ के अलावा इसे कहीं-कहीं चौथ चांदणी, चौक च्यांदणी, चट्टा चौथ जैसे नामों से भी जाना जाता।

-म. भा.

अतीत की यादों से भविष्य को सुनहरा बनाएं : कटारिया

कलाकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन

उदयपुर। तेरापंथ सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की ओर से निर्मित हस्तकला, चित्रकला, हस्तलेख, लिपिकला तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं की अद्भुत प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि यह इतनी बड़ी संपत्ति है कि जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अतीत को संग्रहित कर आने वाली पीढ़ियों को सीख देने का यह प्रयास वंदनीय है।

बहुत परिश्रम और साधना से बनाई गई ये कलाकृतियों खुद अपने आपमें जीवन दर्शन है। हम इनका अवलोकन तो करें ही, खुद अपने घर पर भी पुरानी कलाकृतियों को संग्रहित कर आने वाली पीढ़ियों को स्वावलंबन, निरंतर कर्मशीलता की सीख दें। अतीत की यादों का संयोजन प्रेरणादायी होगा तो भविष्य भी उज्जवल होगा।

इससे पूर्व गुलाबचंद कटारिया ने संयोजक आलोक पगारिया, शासनश्री मुनि सुखलाल, मुनि मोहजीत, मुनि जयेश सहित सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की मौजूदगी में फीता खोलकर तेरापंथ भवन में 'तेरापंथ हस्तकला प्रदर्शनी' का उद्घाटन किया। अवलोकन के दौरान गृहमंत्री प्रदर्शनी में सजे अद्भुत चित्र संसार को देख गद्गद हुए व कहा कि उदयपुर के इतिहास में अब तक ऐसा दुर्लभ संकलन देखने को नहीं मिला। हर कलाकृति में न जाने कितने संदेश और जीवन दर्शन छिपे हैं।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने की। विशिष्ट अतिथि भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रमोद सामर थे। प्रदर्शनी के विविध आयामों के बारे में शासनश्री मुनि सुखलाल व मुनि मोहजीत ने कहा कि जीवन में कला का बड़ा महत्व है। यह हमें एकाग्रचित्त बनाकर जीवन को नई दिशा देती है। मैक इन इंडिया का आज का विचार तो जैन धर्म परम्पराओं में बरसों से रचा बसा है। इसे साधु-साध्वियों ने अथक परिश्रम व हुनर से पोषित-पल्लवित किया है।

रंगाई-बुनाई, कढ़ाई, हस्तकला हो या फिर चित्रकला। ये सभी हमारे व्यक्तित्व का परिमार्जन करने के ही साधन हैं। वर्तमान युग में हमें अपनी पीढ़ियों को इनसे फिर से जोड़ कर अपने भव्य अतीत को फिर से प्रकाशवान बनाना है। तेरापंथ की परम्परा में साधु-साध्वियां अपनी जरूरत की सभी वस्तुएं खुद बनाते हैं। स्वागत उद्बोधन तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने दिया। आभार राजेंद्र बाबेल ने जताया जबकि मंगलाचरण ऊषा चव्हाण, रश्मि पगारिया व दल ने किया।

प्रदर्शनी में एक पृष्ठ पर संपूर्ण भगवत गीता के 700 श्लोक, 30 हजार अक्षर व गत्ते से बनी धूप घड़ी जो रोशनी में रखते ही सही समय बाती है को देख आगंतुक दांतों तले उंगली दबाते हैं। हस्त निर्मित डोरिया, गूंथाई शिल्प का चमत्कार, नारियल की टोपसी (प्यालों) पर विभिन्न सूक्ष्म आलेखन कलाकारी, काष्ठ प्यालों का प्रथम, मध्यम व अंतिम रूवरूप, कपड़े से बनी व्याख्यान पत्र संरक्षक पेटिका, काष्ठपात्र, विभिन्न रंगों में बिना मोती के धागे की आकर्षक मालाएं, नशा मुक्ति, अणुव्रत चित्रावली, बुद्धि परीक्षा का संसार, श्लोकबंद संसार, पांच हजार वर्ष का कैलेंडर, हस्तरेखाओं में शुभ चिन्ह, आचार्य तुलसी युग में विभिन्न प्रकारों में हस्तलिपियों का दिग्दर्शन, तेरापंथ के प्रथम आचार्य भीखणजी के हस्तलिखित पत्र, पीपल के सूखे पत्तों का रचना संसार, पेपरमेशी, आचार्य तुलसी की अमर कृति अग्नि परीक्षा, आचार्य तुलसी का संस्कृत श्लोकों द्वारा निर्मित फोटो, उनके गीत 'वेलकम' शब्द में।

अक्षय, ट्विंकल बने पी सी ज्यलूर के ब्रांड एम्बैसडर

उदयपुर। प्रतिष्ठित ज्यूलरी ब्रांड पी सी ज्यूलर ने मैगास्टार अक्षय कुमार और मशहूर लेखक टिवंकल खन्ना को ब्रांड एम्बैसडर नियुक्त किया है। कंपनी इस दमदार जोड़ी के साथ अपने टीवी और

प्रिंट कमर्शियल को जल्द जारी करेगी जिसमें ब्रांड की खूबियों और आभूषण निर्माण की कला का अद्भुत समन्वय दिखायी देगा।

पी सी ज्यूलर के मैनेजिंग डायरेक्टर बलराम गर्ग ने कहा कि हम अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्नान को पी सी ज्यूलर के पहले ब्रैंड एम्बैसडर नियुक्त किए जाने पर बेहद रोमांचित हैं। इस स्टार जोड़ी ने प्रेम और ऊर्जावान संबंधों की ताकत की बुनियाद पर एक खूबसूरत भविष्य तैयार करने का बेहद शानदार उदाहरण पेश किया है। हमें विश्वास है कि इस जोड़ी के साथ आने से हमारे ब्रांड को और धार मिलेगी और देश में पी सी ज्यूलर की ब्रांड छवि भी और मजबूत होगी। देश के दिग्गज ब्रांड पी सी ज्यूलर भारत में सबसे तेजी से बढ़ने वाले ज्यूलरी रिटेल चेन हैं जिनके देशभर के 20 राज्यों के 67 शहरों में 84 शोरूम हैं। आकर्षक वैडिंग ज्यूलरी और जेब की आसान पहुंच वाले गहने उपलब्ध कराने वाले पी सी ज्यूलर ने शानदार डिजाइनों के साथ-साथ अभूतपूर्व क्वालिटी भी ग्राहकों को सौंपी है। ब्रांड ने डिजाइन के क्षेत्र में पुरोधा की भूमिका निभाते हुए हर गहने को बेहद नफासत से गढ़ा है। पारंपरिक और अधुनिक गहनों की ब्रांड की रेंज को उसकी अद्भुत कारीगरी के लिए बेहद सराहा जाता रहा है। पी सी ज्यूलर के ब्रांड एम्बैसडर नियुक्त होने पर अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्ना ने कहा कि पी सी ज्यूलर परिवार का हिस्सा बनने पर हम बेहद खुश हैं, और हमें एक ऐसे ब्रांड के साथ जुड़ने पर गर्व है जो गहनों की अनूठी डिजाइनिंग, नेतृत्वशाली स्थिति और भरोसे का पर्याय बन चुके हैं। हम भारत के इस ब्रांड के साथ रोमांचक सफर को लेकर उत्सुक हैं।

वोडाफोन और ऑल्टबालाजी में साझेदारी

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने अपने एंटरटेनमेन्ट ऐप वोडाफोन प्ले पर ओरिजिनल भारतीय कन्टेन्ट उपलब्ध कराने के लिए ऑल्टबालाजी के साथ साझेदारी का ऐलान किया है। वोडाफोन इण्डिया में कन्ज्यूमर बिजनेस के एसोसिएट डायरेक्टर अवनीश खोसला ने कहा कि वोडाफोन प्ले एक वीडियो स्ट्रीमिंग मोबाइल ऐप है जिसपर उपभोक्ता 16 भाषाओं में अनलिमिटेड फिल्में और 300 से ज़्यादा लाईव टीवी चैनल देख सकते हैं और विभिन्न श्रेणियों में वीडियो एवं म्यूज़िक कन्टेन्ट का आनंद पा सकते हैं। ऐसे में ऑल्ट बालाजी के रिच कन्टेन्ट पोर्टफोलियो के वोडाफोन प्ले में शामिल होने से वोडाफोन के लाखों उपभोक्ता किसी भी समय, किसी भी स्थान पर अनलिमिटेड मनोरंजन का लाभ उठा सकेंगे। ऑल्टबालाजी के सीईओ नचिकेत पंतवद्य ने कहा कि हमारा कन्टेट 18-35 आयुवर्ग के शहरी दर्शकों के लिए भारतीय भाषाओं में विविध मनोरंजक सामग्री पेश करता है। इससे पहले भी दर्शक हमारी सेवाओं को पसंद करते रहे हैं और अब हम चाहते हैं कि हमारी यह मनोरंजक सामग्री दर्शकों को जब चाहे, जहां चाहे उपलब्ध कराई जा सके। हमारा मानना है कि वोडाफोन प्ले ऐप के ज़रिए हमारा मनोरंजक कंटेन्ट बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं तक पहुंचेगा और वे इसका लुत्फ़ उठा सकेंगे। गत अप्रैल माह में 9 ओरिजिनल शो के साथ लॉन्च किया गया ऑल्टबालाजी आज सभी वर्गों के दर्शकों के लिए प्रमुख वीडियो-ऑन-डिमाण्ड मंच बन गया है। ऑल्ट बालाजी हर महीने नए शो लॉन्च करता है। अब जल्द ही नया शो बोस डैड/अलाइव लॉन्च करने जा रहा है जिसके मुख्य अभिनेता राजकुमार राव हैं।

इन्टैक्स और वोडाफोन में साझेदारी

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने मोबाइल हैण्डसैट ब्राण्ड इन्टैक्स टेकनोलोजीज़ के साथ साझेदारी का ऐलान किया। वोडाफोन इण्डिया में कन्ज्यूमर बिजनेस के एसोसिएट डायरेक्टर अवनीश खोसला ने कहा कि इन्टैक्स 2जी हैण्डसैट पर 100 रु तक के हर वॉइस प्लान रीचार्ज पर, वोडाफोन के उपभोक्ताओं को 50 रु का अतिरिक्त टॉकटाईम या 50 फीसदी अतिरिक्त कैशबैक मिलेगा। उपभोक्ता इस कैशबैक का इस्तेमाल वॉइस कॉल्स, एसएमएस और अन्य वैल्यू एडेड सेवाओं के लिए कर सकते हैं। कैशबैक ऑफर 31 अक्टूबर तक वैद्य है और इसका इस्तेमाल इन्टैक्स के सभी मौजूदा एवं आगामी मॉडलों तथा हाल ही में लॉन्च की गई 'नवरत्ना' सीरीज़ पर भी किया जा सकता है।

इन्टैक्स टेक्नोलोजीज़ की डायरेक्टर और बिजनेस हैड निधि मार्कंडे ने कहा कि वॉइस प्लान्स के लिए वोडाफोन के साथ हमारी साझेदारी फीचरफोन के उपयोगकर्ताओं के लिए बेहद फायदेमंद साबित होगी। वे त्योहारों के इस सीज़न में अपने परिवारजनों और दोस्तों के साथ लम्बी बातें कर सकेंगे। वोडाफोन का अखिल भारतीय नेटवर्क तथा इन्टैक्स का वितरण चैनल उपभोक्ताओं के लिए बेहद कारगर होगा। इसके अलावा इन्टैक्स ने सभी 2जी फीचरफोन्स में 180 दिनों की रिप्लेसमेन्ट वारंटी का खास ऑफर भी पेश किया है।

एचडीएफसी बैंक द्वारा 'इंडस्ट्री एकेडेमिया' लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक के सेंटर ऑफडिजिटल एक्सिलेंस (कोड) ने 'इंडस्ट्री एकेडेमिया' लॉन्च किया। देश में अपनी तरह का यह पहला अभियान फिनटेक और स्टार्टअप्स को मेंटर करके देश के सर्वोच्च टेक्निकल एवं बी-स्कूलों में इन क्यूबट करेगा। 'इंडस्ट्री एकेडेमिया' का लॉन्च मुंबई में आयोजित एक ईवेंट में प्रो.मनीष श्रीखंडे, डीन-इन्क्यूबेशन एण्ड इनोवेशन-आईआईटी, रुड़की, प्रो. आनंद कुसरे-हेड, देसाई सेठी सेंटर फॉर इंटर प्रेन्योरशिप, आईआईटी बॉम्बे के साथ नितिन चुग, कंट्री हेड-डिजिटल बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक ने किया।

नितिन चुग ने कहा कि पहले चरण में विभिन्न संस्थानों के साथ इस तरह की 50 से अधिक पार्टनरशिप्स की योजना बनाई जा रही है, जिसमें आईआईटी-बॉम्बे, आईआईटी-रुड़की एवं आईआईएम में सीआईआईई शामिल हैं। इसका लक्ष्य इन संस्थानों में प्रारंभिक चरण में इंटर प्रेन्योरशिप सेल्स और इन्क्यूबेशन के समय संभावना युक्त विचारों को पहचानना और उन्हें ग्राहकों के लिए तैयार उत्पाद में विकसित करने में मदद करना है। बैंक विभिन्न कार्यों जैसे ग्राहक अनुभव पर स्टार्ट-अप्स को

मेंटर करने , मार्केट के समय एवं खर्च को कम करने के लिए अपनी डोमेन की विशेषज्ञता का उपयोग करेगा। बदले में स्टार्टअप्स को विशेषज्ञ जानकारी एवं ज्ञान के साथ अपने विचारों को वास्तविक रूप देने के लिए बैंक का मंच मिलेगा।

प्रो. मनीष श्रीखंडे ने कहा कि उद्योग और एकेडेमिया के बीच व्यवहार में पारस्परिक विकास की अपार संभावना है। आमतौर पर एकेडेमिक शोध कुछ विद्वता पूर्ण प्रकाशनों के साथ सिद्धांत के चरण में प्रमाण पर जाकर समाप्त हो जाती है और ऐसा विरले ही होता है कि ये विचार किसी उत्पाद या प्रोटोटाईप के रूप में विकसित हो पाएं, तो अपनाए जाने के लिए तैयार हो। उद्योग के साथ निरंतर व्यवहार एकेडेमिक शोध के प्रति अधिक केंद्रित दृष्टिकोण की ओर ले जा सकते हैं और उत्पाद के विकास एवं टेस्टिंग में अगले तर्कशील कदम के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

'अधिक समय तक काम करना और काम का तनाव' दिल को सेहतमंद रखने में प्रमुख रूकावट

उदयपुर। विश्व हृदय दिवस के मौके पर सफोलालाइफ ने भारत में सफोलालाइफ अध्ययन 2017 पेश किया है, जिसमें भारतीयों द्वारा एक स्वस्थ हृदय हेतु स्वस्थ जीवन जीने की राह में आने वाली रुकावटों को प्रमुखता से दर्शाया गया है। भारत में हृदय स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, लेकिन दिल की बीमारियों के खतरों के चौंकाने वाले आंकड़े अब भी लगातार बढ़ रहे हैं। विश्व हृदय दिवस पर सफोलालाइफ अध्ययन ने तथ्यों की गहराई में जाकर, यह पता लगाया है कि लोग क्यों अपने हृदय के स्वास्थ्य में सुधार के लिए कोशिश नहीं कर पा रहे, जबकि उन्हें इसके खतरों की भलीभांति जानकारी है।

लोग अक्सर रोजाना की मुश्किलों का सामना करते हैं, जो उन्हें अपने इच्छित शारीरिक लक्ष्य हासिल करने या फिर एक स्वस्थ दिनचर्या कायम रखने से रोकते हैं। सफोलालाइफ अध्ययन का उद्देश्य हृदय के स्वास्थ्य की रुकावटों को समझना है, जिससे दिल की बीमारियों के खतरे में जी रहे लोगों को एक स्वस्थ हृदय के अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और इससे जुड़ी आदतों का पालन सुनिश्चित किया जा सके। यह अध्ययन दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता में 1306 व्यक्तियों पर किया गया है।

पद्मश्री विजेता डॉ. शशांक जोशी, अध्यक्ष, हाइपरटेंशन सोसायटी ऑफ इंडिया, वरिष्ठ एंडॉक्रिनोलॉजिस्ट, लीलावती हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट ने कहा कि हालांकि हृदय के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता तो बढ़ रही है, लेकिन इस पर कोई वास्तविक कदम नहीं उठाए जा रहे। सफोलालाइफ अध्ययन में भारत में हृदय के स्वास्थ्य की मुश्किलों का खुलासा हुआ है। अगर इन रुकावटों को हटाने के प्रयास किये जाएं, तो स्वस्थ आदतों का पालन करना आसान होगा। साथ ही, कार्डियो वास्कुलर बीमारियों के खतरे में जी रहे लोगों को एक स्वस्थ हृदय के साथ अच्छी जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

हमारी आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा बन चुकी खानपान की बदलती आदतें, अधिक समय तक काम करने और काम का तनाव बढ़ने के बावजूद हमें अपने दिल को स्वस्थ बनाने के लिए तरीके ढूंढना जरूरी है। आधुनिक जीवन ने हमें सुस्त बना दिया है, चाहे वो ऑफिस में हो, यात्रा के दौरान या घर पर। इसलिए हम लोगों को सक्रिय रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहेंगे ताकि भारत में कार्डियो वास्कुलर बीमारियों का खतरा कम हो सके।

टाटा मोटर्स ने लॉन्च की बहुप्रतीक्षित एसयूवी-टाटा नैक्सन

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने जैन-नैक्सट लाइफ स्टाइल एसयूवी-टाटा नैक्सन के लॉन्च के साथ ही तेजी से बढ़ते कॉम्पैक्ट एसयूवी वर्ग में प्रवेश की

घोषणा की है। मयंक पारीक, प्रेसीडेंट-पैसेंजर व्हीकल बिज़नेस यूनिट, टाटा मोटर्स ने कहा कि पर्सनल कार ग्राहकों को लक्षित कर पेश टाटा नैक्सन कंपनी की 'इंपैक्ट डिजाइन' फिलॉसफी पर आधारित चौथा वाहन है। इसमें उन ग्राहकों के लिए ग्लोबल और कंटेपरेरी डिजाइन तथा अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ टैक्नोलॉजी एवं खूबियां शामिल हैं जो अपने खुद के अनूठे अंदाज़ में अपने आपको अभिव्यक्त करना जानते हैं। ग्राहकों तथा उनकी आकांक्षाओं को कारोबार के मूल में रखते हुए टाटा नैक्सन पैसेंजर वाहनों के बाजार में अधिक निजी अनुभवों के जरिए भावनात्मक बुलंदियों पर ले जाने वाली पेशकश है। पेट्रोल संस्करण की 5,83,750 रु की उदयपुर एक्स-शोरुम कीमत और डीज़ल संस्करण की 6,83,734 रु की एक्स-शोरुम की शुरूआती कीमत के साथ टाटा नैक्सन इस श्रेणी में सबसे प्रतिस्पर्धी कीमत पर उपलब्ध एसयूवी है जिसमें इस वर्ग में सबसे बेहतरीन खूबियां मौजूद हैं। टाटा नैक्सन देशभर में टाटा मोटर्स के 650 अधिकृत सेल्स आउटलेट्स पर उपलब्ध है। टाटा नैक्सन चार वेरिएंट्स- एक्सई, एक्सएम, एक्सटी तथा एक्सजेड प्लस में पांच आकर्षक रंगों-वरमॉन्ट रैड, मोरक्कन ब्लू, सिएटल सिल्वर, ग्लास्गोग्रे और कैलगरी व्हाइट में आएगी।

मंडोवर जहां......

(पृष्ठ एक का शेष)

बहुचर्चित रावण की लंका के संबंध में पूछने पर कल्लाजी ने बताया कि वह लंका तो पानी में, समुद्र में डूबी हुई है। उस लंका का एक झूंपड़ तिरुपति बालाजी है। लंकापुरी पर राम ने 100 योजन का पुल बांधा था। तिरुपति वह स्थान है जहां राम-विभीषण का मिलन हुआ था। उन्होंने कहा कि बातें तो कई हैं। मैं बता भी दूंगा तो जगत विश्वास नहीं करेगा। उन्होंने बताया कि इसी मंडोवर में नीचे 3 सुरगें हैं। इसमें से एक अयोध्या, दूसरी लंका तथा तीसरी द्वारिका जाती है।

ऐसा नहीं कि तबसे यह मंडोवर ऐसा ही पड़ा हुआ है। इन्हीं पत्थरों से नये महल बनते रहे और जगत बसता रहा। आज जो जोधपुर है उसका बहुत कुछ निर्माण यहीं के पत्थरों से हुआ है। उन्होंने बताया कि आज से तीन हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने भी यहां आकर विवाह रचाया था। यह विवाह हुआ जामवंती से। दरसल यह वैवाहिक कार्यक्रम योजनाबद्ध नहीं रहा जैसा रावण का रहा। अर्जुन के साथ श्रीकृष्णजी मणि ढूंढते-ढूंढते यहां आ गये। इसलिए कि वह मणि जामवंती के पास थी। इससे वह खेल रही थी। कृष्णजी ने वह मणि मांगी तब जामवंती का पिता जामवंत बोला- 'मणि दूंगा पर उसके साथ-साथ इस बालकी को भी देना चाहूंगा।' कृष्णजी ने यह बात मान ली तब वहीं उनका विवाह हो गया।

मंडोवर अपने में बहुत कुछ छिपाये है। सारी की सारी परतें यो की यों जमी पड़ी हैं। कौन खोले इन इतिहास परतों को! मंडोवर के प्रस्तरों को! काल कितना हावी होता चलता है। ऐसे में मनुष्य की क्या बिसात। वह कहां-कहां जीयेगा-वर्तमान में कि भूत में या भविष्य में! बहरहाल मंडोवर तो सबमें जीता हुआ अतीत बना हुआ है।

यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है कि तब रावण के साथ आये उनमें से उसके कुछ वंशज जोधपुर में बस गये जो तब से अब तक वहीं बसे हुए हैं। इस संबंधी दैनिक नवज्योति में जो खबर छपी वह इस प्रकार है-

रावण दहन के बाद जोधपुर में उसके वंशजों ने मनाया शोक, बदले जनेऊ

रावण की बरात में जोधपुर आए उसके कुछ वंशज यहीं पर बस गये। ये लोग अब भी रावण की पूजा करते हैं। जब रावण का दहन हुआ तो इन लोगों ने शोक मनाया और अपने जनेऊ बदले। ये लोग स्वयं को रावण का वंशज मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि मंदोदरी के साथ रावण का विवाह जोधपुर में हुआ था। उस समय बरात में आए ये लोग यहीं पर बस गए। इन लोगों ने रावण का मंदिर बनवा रखा है और नियमित रूप से रावण की पूजा करते हैं। इनका कहना है कि दशहरा हमारे लिए शोक का प्रतीक है। इस दिन हमारे लोग रावण देखने नहीं जाते हैं। शोक मनाते हुए शाम को स्नान कर जनेऊ को बदला जाता है और रावण के दर्शन करने के बाद भोजन किया जाता है। जोधपुर के मेहरानगढ़ फोर्ट की तलहटी में रावण और मंदोदरी का मंदिर स्थित है। गोधा गोत्र के ब्राह्मण ने यह मंदिर बनवाया है। पुजारी कमलेशकुमार दवे का दावा है कि उनके पूर्वज रावण के विवाह के समय यहां आकर बस गये।

- दैनिक नवज्योति, उदयपुर, 01-10-2017, पृष्ठ 7

उदयपुर महारानी......

(पृष्ठ दो का शेष)

इन सारे लोगों के लिए खाकी पोशाक रहती। रानी साहिबा तथा उनकी बाइयां हरी पोशाक धारण करतीं। शिकार से सम्बन्धित व्यक्तियों की संख्या दो-दो हजार तक पहुंच जाती। रानीजी के साथ रहने वाली डावड़ियों की संख्या भी सौ को पार कर जाती। आसपास के गांव के गांव भी शिकार देखने उलट पड़ते। शेर का शिकार होने पर सर्वाधिक खुशी मनाई जाती। वहां हाजिर प्रत्येक व्यक्ति को तब दो-दो रूपये भेंट दिये जाते।

अधवेसरे का शिकार भी महत्वपूर्ण माना जाता। इस अवसर पर भी हर एक को एक रूपया दिया जाता। वर्षा के बाद सर्दी शुरू होने पर मुहूर्त के अनुसार जो शिकार प्रारंभ किया जाता वह 'मुहूर्त का शिकार' कहलाता। इसमें खास कर सूअर का ही शिकार किया जाता। शिकार प्राय: दिन में किया जाता। आसपास की ग्रामीण महिलाएं भी तब महारानीजी के दर्शनार्थ उमड़ पड़तीं। अपने शिकारी जीवन में महारानी साहिबा ने सर्वाधिक शिकार सूअरों के ही किये। किसी पक्षी पर उन्होंने कभी हाथ नहीं उठाया।

शेर और सूअर के शिकार के अतिरिक्त महारानी साहिबा ने अधवेसरे का शिकार भी किया। अधवेसरा यों शेर से भी अधिक खतरनाक होता है। यह पेड़ पर चढ़कर मारे हुए जानवर तक को उसकी शाखाओं पर लटका देता है। ताकतवर इतना होता है कि भेड़, बकरी के अतिरिक्त गधे तक को पेड़ पर लटका देता है।

एकबार एक अधवेसरे को जंगल से पकड़ कर पीछोला के पानी में छुड़वा दिया। पानी में तैरता-तैरता जब वह बाहर निकलने को ही था कि जगनिवास से महारानी साहिबा ने उसे अपनी बंदूक का निशाना बनाया जो हरिदासजी की मगरी पर जाकर ढेर हो गया। इसी तरह एकबार जोधपुर से पाली पधारते समय बीच रास्ते में सूअर का सामना हो गया। यह सूअर बड़ा खूंख्वार था। महारानी साहिबा ने बड़ी बहादुरी से इस सूअर का काम तमाम किया। इस समय उनके साथ जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंहजी का परिवार था।

सीताबाई की बातों से हमें लग रहा था कि हम किसी कमरे में बैठ कोई फिल्म देख रहे हैं। सीताबाई से मैंने शिकार की ऐसी कोई रोमांचकारी घटना सुनाने को कहा जो उन्हें याद करने पर थरथरा देती है। यह सुन सीताबाई मुझे बैठे रहने का इशारा कर अन्दर चली गई। मैं समझ गया कि वह राजमाताजी से पूछने गई है। कुछ ही समय में लौटकर सीताबाई ने कहना प्रारंभ किया- 'एकबार चित्तौड़ के बोकड़्या मूल में महाराणा साहब ने मांडे पर से शेर को गोली दागी। इस पर शेर बहुत बुरी तरह बिगड़ पड़ा। इतना बिगड़ा कि उसने मांडे पर ही आक्रमण कर दिया तब महारानी साहिबा ने बड़ी हिम्मत के साथ उस शेर को गोली मारी, जो उसके मुंह में जा लगी और वह वहीं ढेर हो गया। यदि उस समय थोड़ा सा भी ध्यान चूक हो जाता तो बड़ा अनर्थ हो जाता।'

इसी बोकड़्या मूल की एक और घटना सुनाते हुए सीताबाई बोलीं- उस जंगल में शेर और शेरनी दोनों साथ-साथ घूम रहे थे तदनुसार दोनों का शिकार करने की व्यवस्था हुई। हाके द्वारा शेर तो दिखाई दे गया, जिसका शिकार महाराणा साहब ने किया पर शेरनी कहीं ऐसी छिप गई कि बहुत ढूंढने पर भी नहीं दिखाई दी।

नौकरियों तथा टौकियों ने तब यही अनुमान लगाया कि शेरनी कहीं निकल भागी है। अत: वे निश्चिंत हो वहां से चलने लगे पर महारानी साहिबा को पक्का विश्वास था कि जहां शेर मारा गया है शेरनी भी उसी के आसपास कहीं होनी चाहिए। जब टौकिये शेर के पास आने को उतारू हुए तो महारानीजी घबराई कि कहीं ये लोग शेरनी के शिकार न बन जायें।

उन्होंने तत्काल ही अपनी दासी की साड़ी का पल्ला बंदूक की नौंक पर लेकर शिकारगाह की खिड़की (तीरकस) से बाहर निकाल इशारा दिया कि वे इधर न आयें। इतने में वहां छिपी शेरनी दहाड़भरी छलांग खाती हुई उन पर झपटी कि रानी साहिबा ने उसका काम तमाम कर दिया। यदि महारानी साहिबा ध्यान नहीं रखतीं तो न जाने उस दिन कितने लोग उस शेरनी के शिकार हो जाते। महारानी साहिबा ने लगभग 15 शाही शेरों का शिकार किया। इनमें सबसे बड़ा शेर 300 सेंटीमीटर लम्बा और सवा सौ सेंटीमीटर ऊंचा था। यह सुनहरी शेर था जो संवत् 1999 की पौष शुक्ल 10 को मारा गया।

महारानी साहिबा को शिकार का शौक इतना जबर्दस्त था कि उन्होंने अपनी साड़ियों में भी समग्र शिकार-दृश्य को सलमाया-सितराया। शिफोन कपड़े पर कढ़ी हुई बेशकीमती कुछ ऐसी साड़ियां सीताबाई ने मुझे दिखाईं जिनमें जयसमुद्र तथा चित्तौड़ के शिकारगाह तथा शिकार के दृश्य झिलमिलाते बड़ा आकर्षण लिये थे।

- द्रष्टव्य : धर्मयुग में 12 फरवरी 1978 को प्रकाशित 'शाही शिकार उदयपुर महारानी के' शीर्षक लेख।

अर्थांक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम

पिछले दिनों 4 सितम्बर को भारतीय जीवन बीमा निगम उदयपुर मंडल द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक संजय भार्गव ने बताया कि यह प्रतियोगिता बीमा सप्ताह के अन्तर्गत हुई। इसमें विविध स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन बड़ा ही उत्साहवर्धक रहा। इसमें सेन्टपॉल सीनियर सैकण्डरी के नवीं कक्षा के छात्र अर्थांक भानावत ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

फतहप्रकाश पैलेस देश का बेहतरीन होटल

उदयपुर। विश्व पर्यटन दिवस के उपलक्ष्य में नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में नेशनल ट्यूरिज्म अवार्ड 2015-16 के तहत विभिन्न श्रेणी में भारत की बेहतरीन होटलों में चयनित एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स, उदयपुर के फतहप्रकाश पैलेस होटल को बेस्ट होटल अण्डर हेरिटेज (ग्राण्ड) केटेगरी 2015-16 का सम्मान राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कार्यकारी निदेशक लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को प्रदान किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि पर्यटन विकास के क्षेत्र में होटल व्यवसाय रीढ़ की हड्डी समान है। इस अवसर पर पर्यटन राज्यमंत्री के.जे. अल्फोंस एवं एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के जनरल मैनेजर आदित्यवीर सिंह भी उपस्थित थे।

सक्का ने बनाई सबसे छोटी सोने की फीफा अंडर-17 ट्रॉफी

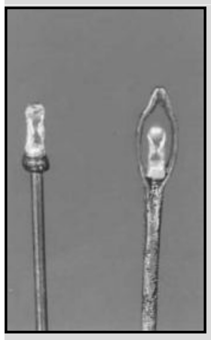

उदयपुर। उदयपुर के वर्ल्ड रिकॉर्डधारी इकबाल सक्का ने विश्व की सबसे छोटी सोने की फीफा अंडर-17 विश्वकप ट्राफी बनाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड का दावा प्रस्तुत किया है। सक्का ने विश्व कप ट्रॉफी जैसी सूक्ष्मदर्शी लेन्स की मदद से देखी जाने वाली मात्र 25 मिलीग्राम सोने में एक-एक मिलीमीटर की दो फीफा अंडर 17 ट्राफियां बनाकर नया रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने फीफा अंडर-17 को सुई के छेद के अंदर दर्शित किया व दूसरी ट्रॉफी को ऑलपीन पर जमा रखा है। ये दोनों ट्रॉफियां शहर के प्रमुख पर्यटन स्थल फतहसागर, दूधतलाई, मोतीमगरी, सुखाड़िया सर्कल, सहेलियों की बाड़ी आदि स्थलों पर पर्यटकों एवं आमजनों के अवलोकनार्थ रखी गयीं जिसकी सभी ने भरपूर सराहना की।

'स्वच्छता से दिव्यता तक व वृक्ष लगाओ-जीवन दिलाओ' कार्यक्रम का शुभारंभ

उदयपुर। श्री सत्य साईं सेवा संगठन भारत (एसएसएसएसओ इंडिया)-एक बहु सांस्कृतिक अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सेवा संगठन, प्रशांति निलयम, पुट्टपार्थी, आंध्र प्रदेश से 'स्वच्छता से दिव्यता तक' नामक राष्ट्रव्यापी स्वच्छता कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। श्री सत्य साईं संगठनों के अखिल भारतीय अध्यक्ष नीमीश पंड्या एवं छत्तीसगढ़ के राज्यपाल बलरामदास टंडन की उपस्थिति में रायपुर में गांधी जयंती पर सफाई अभियान चलाए गए। यह कार्यक्रम 20 अक्टूबर को पुटपर्ती के भगवान श्री सत्य साईं बाबा के 'अवतार घोषणा दिवस' पर समाप्त होगा। इस साल एसएसएसएसओ इंडिया ने 'वृक्ष लगाओ-जीवन दिलाओ' अभियान पर जोर दिया।

नीमीश पंड्या ने कहा कि वृक्षारोपण में देशभर में 8 लाख स्वयंसेवक भाग लेंगे। स्वच्छता अभियान को कस्बों, गांवों और महानगर तीन भागों में विभाजित किया गया है। इस साल 2500 से अधिक श्री सत्य साईं सेवा समितियां भारत के 20 राज्यों में 1000 से अधिक गतिविधियों के साथ अपनी तरह के राष्ट्रव्यापी स्वच्छता कार्यक्रम में भाग लेने के लिए तैयार हैं। सबसे पहले गांव के स्वच्छता कार्यक्रम का उद्घाटन किया जाएगा जो सेवा स्वयंसेवक पूर्व-निर्धारित स्थानों की सफाई शुरू करेंगे। बाल विकास गुरु छोटे बच्चों के लिए ड्राइंग, निबंध और कविता जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करेंगे। संगठन का नि:स्वार्थ युवा सेवा दल भी स्वच्छता अभियान पर लघु फिल्म दिखाएगा। इसके बाद स्वच्छता जागरूकता से जुड़े विषयों पर 'हाथ धोने के महत्व' समस्त बाल विकास, व्यक्तिगत, स्वच्छता का महत्व आदि पर चर्चा होगी।

गांवों में सेवा स्वयंसेवकों द्वारा विद्यालय, नदी बैंक आदि की सफाई, खुले शौचालय के खतरों, पॉलिथीन का उपयोग, जल निकासी प्रणाली, व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व, सुरक्षित पीने के पानी का स्रोत और स्वच्छ ऊर्जा के स्रोत जैसे जैव-गैस और सौर अध्ययन रोशनी पर जानकारी दी जायेगी। शहरों और झोपड़पट्टियों में नगर निगम की ठोस कचरा प्रबंधन प्रणाली का समर्थन करने के लिये सेवा स्वयंसेवक कचरा संग्रह के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए घर-घर के दरवाजे तक आयेंगे।

हम दिल के समंदर में 'इंडिया' साथ ले जा रहे हैं

10 देशों के नामचीन कलाकारों व भारतीय कलाकारों ने बनाई 20 कलाकृतियां

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। हम दिल के समंदर में 'इंडिया' साथ लेकर जा रहे हैं। अपने देश और दुनिया को कला के माध्यम से यह बताने जा रहे हैं कि भारत न सिर्फ एक खूबसूरत देश है, बल्कि यहां की कला, संस्कृति, समृद्ध पुरा वैभव और लोगों की आत्मीयता अतुलनीय, अद्भुत है।

उन सबमें उदयपुर का प्राकृतिक परिवेश, झीलें, महल और समृद्ध विरासत मन का सुकून देने वाली है। इस सृजनधर्मी देश को हमारा नमन है। यह कहना था दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के ख्यातनाम चित्रकारों का जो आसियान-भारत संबंधों की 25वीं वर्षगांठ के दस दिवसीय ऐतिहासिक जश्न के लिए झीलों की नगरी के मेहमान बने थे।

'द अनंता' में एक-दूसरे को अलविदा कहने जुटे आसियान देशों और भारत के ख्यातनाम कलाकारों के संगम ने वसुधैव कुटुम्बकम का सपना साकार किया। यहां पर जिए कुछ भावुक पलों को साझा किया तो रिश्तों की गर्माहट को दर्शाने वाली बातों के सहारे एक-दूसरे का शुक्रिया अदा किया। कला के जरिए वार्ता संबंधों की प्रगाढ़ता दिखाई। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय और सहर के तत्वावधान में यह आयोजन हुआ। आसियान के सदस्य देशों में इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलिपींस, मलेशिया, ब्रुनेई, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओ पीडीआर, म्यांमार और वियतनाम के 10 और भारत के 10 आर्टिस्ट ने अपने कला संसार में विश्व मैत्री के भाव का साकार किया।

समापन अवसर पर सहर के फेस्टिवल डायरेक्टर संजीव भार्गव ने कहा कि 'ओशियंस ऑफ ऑपर्च्युनिटीज' यहां सच मायने में साकार हुआ। पीपुल टू पीपुल कॉन्टेक्ट में आसियान व भारत के आर्टिस्ट इतने ज्यादा आपस में घुल-मिल गए कि अब लगता ही नहीं कि वे समंदर पार के अलग-अलग देशों से आए हैं।

इस डिप्लोमेसी को हमें हमेशा जारी रखना है। यही कला की ताकत है कि वह देशों की सीमाएं नहीं देखता, उससे पार सफर करता है, सैलानी बनकर। कला प्रारूपों की बेहद समृद्ध धरोहर और परंपरा से भरपूर आसियान देशों के विजुअल कलाकारों से हमने जो सीखा या जो वे हमसे सीख कर गए उसकी गूंज लोगों के दिलों में बरसों-बरस तक रहेगी।

देश की मशहूर आर्ट क्यूरेटर व आर्ट डिजाइनर प्रिया पॉल ने इस खास कार्यशाला में बनी सभी पेंटिंग्स को 'पीढ़ियों की धरोहर' बताते हुए कहा कि थीम, कंपोजीशन, रंगों के प्रयोग और अभिव्यक्ति की शैली लाजवाब है। सब अपने देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं मगर सबकी सोच समंदर के रास्ते से एक-दूसरे से जुड़ी है। यही जुड़ाव हमारे दिलों में संवेदनशीलता जगाएगा, पूरे विश्व को भाईचारे के रंग में रंगेगा। डिप्लोमेसी अपनी जगह काम करती है मगर आर्ट और कल्चर के माध्यम से बने रिश्ते बहुत अनूठे, आत्मीय व कालजयी होते हैं।

विदेश मंत्रालय के डिप्टी सेक्रेटरी डॉ. मदन मोहन सेठी ने कहा कि आसियान से हमारे रिश्तों की बुनियाद बहुत मजबूत है। कला के माध्यम से उदयपुर में इसकी सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। ये कलाकार जो सांस्कृतिक दूत बनकर अपने देशों में जाएंगे तो वहां पर हमारी ही माटी की खुशबू फैलाएंगे।

इन कलाकारों ने लिया हिस्सा

10 आसियान देशों के नामचीन कलाकार शिविर में हिस्सा लेने आए। इनमें चैन सोफहॉर्न (कंबोडिया), इकरो अखमद इब्राहिम लैली सुब्खी (इंडोनेशिया), कान्हा सिकोउनावोंग (लाओ पीडीआर), मोहम्मद शहरूल हिशाम बी. अहमद तरमीजी (मलेशिया), थेट नाइंग (म्यांमार), नाफाफोंग कुराए (थाईलैंड) और गुएन घिया फुओंग (वियतनाम), भारतीय कलाकार बिनॉय वर्गीस, फरहाद हुसैन, कलाम पटुआ, कियोमी लाइश्राम मीना देवी, महावीर स्वामी, सर्मीद्रनाथ मजूमदार और तन्मय समांता शामिल थे।

कान्यो-मान्यो

मरदां मूंगी मूंछ ही, रेजर मूंगा आज

कान्यो आपणे देश री देसी संस्कृति, संस्कार अर शील माथै सोचण नै गेरो पैठग्यो जदी मान्यो बोल्यो के आजादी रै पछै भी म्हां आपणी रैणी अर पैचाण री जी चीजां देखी वी अबै कळपना जोग रैगी। कदी कठै कोई वणी भेख में मिल जावै तो वो गयो गुजर्‌यो माणस कैवा।

कान्ये हुंकारो भर्‌यौ अर वात चालवा दीधी। बोल्यो कै म्हारै दादाबा रौ पैरण म्हैं देख्यो। नीचे धोवती, ऊपर कुड़तो, माथै पागड़ी नै खांधै अंगोछो राखता। अंगोछो माथा हेटे दै जठै-वठै सुई जाता। न्हावण-पौंछण वै जाती। ओढ़न-बिछावण में काम आवतो। पोटली कर जो चावता, मेल देता।

मान्यो माथो हलावतो हां भरतो र्‌यौ। बोल्यो म्हैं भी म्हारा डोकरा बा नै देख्या है। माटीबाई दादी घाघरो, घाघरा माथै लूगड़ो अर कांचली पैरती। कांचली टूंक्या वाळी अर तना वाळी दो भांत री वैती। कांचली रै कसणा लागती दोई आड़ी जो पाछै मोरां माथै बंधती। कांचली पछै चोली रौ पैरण आयो।

कान्यो पाछै कींकर रैवतो। बोल्यो कै विधवा लुगायां रौ पैरण काळो हो। तड़क-भड़क रा गाबा नीं पैरती। कणी तरै रो सिणगार नीं करती। सुभ कामां खातर वांरो आवणो-जावणो नीं वैतो। टाबर वाळी लुगाई पीळ्यो ओढ़ती। सधवा-सुवागण चूंदड़ ओढ़ती। बवुवड़ घूंघटो काढ़ती। बेट्यां मुरधार राखती। मान्यो बोल्यो, अस्या पैरणऊं पैचाण वै जाती। बेटीऊं बात बतळावण में तुंकारो, रकारो दैता। बवुवड़ नै जीकारो दैता। नारी शील अर सिणगार सूं पैचाण दैती। आछौ ओढ़-पैर नै गैणागांठाऊं लदी रैती। मरद री मोटी पैचाण मूंछ ही। वींरी पैचाण शील नै सूरपणो ही।

कान्यो बोल्यो, आज पतोईनी चालै। सगळा एक घाट पाणी पीवै। अबै कुण लाड़ो-लाड़ी है। कुण भाई-बैन है। कुण नणद-भोजाई है। कुण मावड़-बावड़ है। ठाई नी पड़ै।

कविराव मोहनसिंह जद मसखरी माथै उतर जाता तो डिंगळ रा छंद उपजता। सौभागसिंह शेखावत, सांवळदान आशिया, बिहारीलाल व्यास, क्रस्णचंद शास्त्री अर म्हूं सगळा वारै ओरैदोरै बैठ जावता। कविरावजी री फरमाइस चाळती। वीं टैम मरद री मूंछ्यां वांरो सूरपणो दिखावती। मूंछा माथै बंट लागता। जुद्ध भौम मांय मूंछ्यां रा ताव तीर ज्यूं फरकण मेलता। जोध जवान री मूंछ्यां रौ एक-एक बाल मोर्‌या रै एक-एक पांख ज्यूं सूरज री करणां बखेरतौ। अबै तो मरद रै मूंछां ई नीं दीखै। फटाफट वांनै सुरसत बरस जावती कै डिंगळ मांय जोस खाय रोळा करता। कैवता, ' मरदां मूंगी मूंछ ही, रेजर मूंगा आज' सुणताई ठठ्ठो ठहाको चालतो कै बात मूं बात चालती तो चालती रैवती।

सोजतिया ज्वैलर्स के नए शोरूम का उद्घाटन

उदयपुर। शहर के प्रतिष्ठित और ख्यातनाम सोजतिया ज्वेलर्स के उदयपुर में कोर्ट चौराहा स्थित नए शोरूम का भव्य शुभारंभ बॉलीवुड अदाकारा व फिल्म निर्माता दीया मिर्जा, मिस इंटरनेशनल ट्यूरिज्म-पारूल बिन्दल, सुपर मॉडल लवीना इसरानी, मिस एशिया पेसिफिक 2011-पारूल मिश्रा, पाहेर चेयरपर्सन बी.आर. अग्रवाल, पाहेर सचिव राहुल अग्रवाल, श्री सर्राफा एसोसिएशन उदयपुर के अध्यक्ष इन्दरसिंह मेहता, सोजतिया ग्रुप के संस्थापक प्रो. रणजीतसिंह सोजतिया, निदेशक डॉ. महेंद्र सोजतिया, रीना सोजतिया, ध्रुव व नेहल सोजतिया सहित कई गणमान्य लोगों की मौजूदगी में हुआ।

मंच पर दीया मिर्जा ने प्रशंसकों का अभिवादन किया व सोजतिया ज्वैलर्स के ज्वैलरी कलेक्शन को अद्भुत, नायाब व अनूठा बताया। लोगों की फरमाइश पर उन्होंने अपनी फिल्म रहना है तेरे दिल में का सुपरहिट गीत 'जरा-जरा बहकता है, महकता है आज तो मेरा तन बदन...,' सुनाकर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इस अवसर पर दीया मिर्जा ने ग्राहकों के लिए एक लक्की ड्रा भी खोला जिसमें नेहा दक के नाम कार, गजेंद्र बिस्ट के नाम स्कूटर व हेमंत जैन के नाम पर एलईडी टीवी खुला। इस अवसर पर सोजतिया ज्वैलर्स की विकास यात्रा बनी एक डाक्यूमेंट्री का भी प्रदर्शन किया गया।

सोजतिया ज्वैलर्स के निदेशक डॉ. महेंद्र सोजतिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह हम सबके लिए गौरव का क्षण है। उदयपुर में पहली बार रोसकट डायमंड ज्वेलरी की विशाल रेंज उनके इस नये शोरूम पर उपलब्ध होगी। साथ ही जड़ाऊ डायमण्ड पोलकी कारजवाड़ी क्लेक्शन विभिन्न वैरायटी में उपलब्ध है। हमारे तार ग्राहकों के दिलों से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही जोधपुर में नई ब्रांच का शुभारंभ होगा।

रीना सोजतिया ने बताया कि 22 कैरट हॉलमार्क गोल्ड ज्वेलरी 22 कैरट की ही रेट में उपलब्ध है। शोरूम पर डेबिट या क्रेडिट कार्ड द्वारा भुगतान की सुविधा है, मेकिंग चार्जेज में कमी की गई है व डायमण्ड, पोलकी तथा गोल्ड ज्वेलरी पर 90 प्रतिशत तक लोन सुविधा भी उपलब्ध है। रीना सोजतिया ने बताया कि प्रचलित ट्रेंड के अनुसार यहां आईजी आई सर्टिफाइड डायमंड ज्वेलरी, कलकत्ती गेरू ज्वेलरी का वृहद कलेक्शन देखने को मिलेगा। इस वृहद् शोरूम में एंटीक ज्वैलरी, ट्रेंडी एथनिक ज्वैलरी और स्टाइलिश कंटेंपररी ज्वेलरी का भी मनमोहक कलेक्शन रखा गया है। यहां सभी अवसरों और आयुवर्ग को ध्यान में रखते हुए विभिन्न वैरायटी विभिन्न रेंज में उपलब्ध है। ध्रुव तथा नेहल सोजतिया ने बताया कि डायमंड, पोलकी तथा सोने की ज्वैलरी का 1 वर्ष तक नि:शुल्क बीमा भी प्रदान किया जा रहा है। चांदी का भी भरपूर कलेक्शन मौजूद है, इसमें चांदी के बर्तन, चांदी के सिक्के, गिफ्ट आर्टिकल, चांदी की आकर्षक ज्वेलरी विभिन्न वैरायटी में उपलब्ध हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, पंजीयन संख्या - RAJHIN/2016/72902, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।